रजिस्ट्री सं० डी- 111 REGISTERED No. D-222

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 24] नई दिल्ली, शनिवार, जून 16, 1973 (ज्येष्ठ 26, 1895)
No. 24] NEW DELHI, SATURDAY, JUNE 16, 1973 (JYAISTHA 26, 1895)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके ।
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

नोटिस
(NOTICE)

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 2 फरवरी 1973 तक प्रकाशित किये गये हैं :—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 2nd February 1973 :—

अंक Issue	संख्या और तिथि No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject

—शून्य—
—Nil—

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां नियंत्रक प्रकाशन, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी । मांग-पत्र नियंत्रक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तिथि से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं ।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on indent to the Controller of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Controller within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	587
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	913
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	—
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	665
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्ट	—
भाग II—खंड 3—उपखंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं)	1173
भाग II—खंड 3—उपखंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं	2129
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश	187
भाग III—खंड 1—महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	1051
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस	277
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं	31
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	1569
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसें	107
पूरक संख्या 24—	
9 जून, 1973 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट	759
19 मई, 1973 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म तथा बड़ी बीमारियों से हुई मृत्यु-सम्बन्धी आंकड़े	767

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	587
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	913
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence	—
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence.	665
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB.SEC. (i)—General Statutory Rules (including orders, bye-laws etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (Other than the Administrations of Union Territories	1173
PART II—SECTION 3.—SUB.-SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	2129
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence	187
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	1051
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta	277
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	31
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1569
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	107
SUPPLEMENT No. 24	
Weekly Epidemiological Reports for week ending 9th June, 1973	759
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week ending 19th May, 1973	767

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मन्त्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1973

सं० 36-प्रेज/73—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को उत्कृष्ट वीरता के लिए "कीर्ति चक्र" प्रदान किये जाने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री पाती राम,
ग्राम पाल-का-पुरा,
जिला मुरैना,
मध्य प्रदेश।

28 अगस्त 1971 को यह खबर मिली कि डाकू मोतिया कोड़ी का गिरोह मध्य प्रदेश के जोन्हा ग्राम में किसी का अपहरण करने वाला है तो एक योजना तैयार की गई, जिसके अनुसार पुलिस दल को गांव की कंदराओं की ओर से घेराबंदी करनी थी। छः ग्रामीणों तथा कुछ पुलिस वालों का एक दल इस गांव में भेजा गया। वे ग्रामीणों के भेष में उस गांव में पहुंचे और गांव में डाकुओं के आने की प्रतीक्षा करने लगे। डाकुओं का गिरोह जब लगभग 1900 बजे गांव की वाह्य सीमा पर पहुंचा तो यह दल डाकुओं का सामना करने के लिए चल पड़ा। कुछ समय पश्चात डाकुओं को खतरे का कुछ आभास हुआ। वे वापस जाने ही वाले थे कि वह दल उन पर टूट पड़ा और गुथ्मगुथ्था शुरू हो गई। जब गिरोह के लोग डाकुओं को काबू करने की कोशिश कर रहे थे तो डाकुओं गिरोह के नेता मोतिया कोड़ी ने मोर्चा जमा लिया और अपनी स्टेन गन से गोलीबारी शुरू करने ही वाला था कि श्री पाती राम ने डाकुओं को देख लिया और वे अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की बिलकुल परवाह न करते हुए उस पर झपट पड़े। इस गुथ्मगुथ्था में डाकू गोली का शिकार हो गया। इस मुठभेड़ के दौरान एक और डाकू भी मारा गया।

इस कार्यवाही में श्री पाती राम ने उच्च कोटि की वीरता और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

2. श्री हजारी,
ग्राम चन्द्र पुरा,
जिला मुरैना,
मध्य प्रदेश।

18/19 अप्रैल, 1970 की रात्रि को एम० एल० बन्दूकों से लैस डाकुओं के एक गिरोह ने मध्य प्रदेश के चन्द्र पुर गांव पर अचानक हमला करके गांव वालों को स्तम्भित कर दिया। वे गांव के सभी हृष्ट पुष्ट व्यक्तियों को एक स्थान पर ले गये जहां एक डाकू भरी बन्दूक लेकर उनकी निगरानी करने लगा और शेष डाकुओं ने गांव वालों के घरों को लूटना शुरू कर दिया और जबरदस्ती स्त्रियों के गहने उतार लिए। अपनी सुरक्षा की चिन्ता न करते हुए श्री हजारी उस डाकू पर टूट पड़े जो चौकीदारी कर रहा था। डाकू ने इन पर गोली चलाई लेकिन इन्होंने उस बन्दूक का मुहं एक ओर करके उसे छीन लिया। श्री हजारी की इस वीरता से प्रेरित होकर अन्य ग्रामीण भी जोश में आ गए और उन्होंने पास में खड़ी बैल गाड़ियों में से लकड़ी के डन्डे निकाल कर डाकुओं को मारना शुरू कर दिया। डाकुओं ने अन्धाधुन्ध गोली बरसानी शुरु की लेकिन ग्रामीणों ने दो डाकुओं को गम्भीर रूप से घायल कर दिया। बाद में उनकी हस्पताल में मृत्यु हो गई। इससे डाकू हतोत्साहित हो गए और अपने पीछे 2 एम० एल० बन्दूकें और लूटा हुआ सामान छोड़ कर सिर पर पांव रख कर भाग गए।

इस कार्यवाही में श्री हजारी ने उच्च स्तर की वीरता का परिचय दिया।

3. नं० 7995053 नायक मोहम्मद डार पायनियर को।

15 नवम्बर 1971 को नायक मोहम्मद डार सिलीगुड़ी से लखनऊ के लिए एक गाड़ी में यात्रा कर रहे थे। गाड़ी के सिलीगुड़ी रेलवे स्टेशन से छूटने के तुरन्त बाद उन्होंने एक दूसरे यात्री को संदिग्ध मुद्रा में बैठे हुए देखा, जो अपने हाथ को पीछे छिपाए हुए था। इससे नायक मोहम्मद डार के मन में संन्देह उत्पन्न हुआ और उन्होंने संदिग्ध व्यक्ति को तुरंन्त ही पीछे से पकड़ लिया और देखा कि वह हाथ में एक हथगोला लिए हुए था। अपने प्रांणों को गम्भीर खतरे में डालते हुए वे उस व्यक्ति से जूझ गए। दूसरे यात्रियों की सहायता से उन्होंने उस पर काबू पा लिया और उसे निहत्ता कर दिया उसके कब्जे से एक और हथगोला मिला जो कि उसने अपने सामान में बड़ी सावधानी से संभाल रखा था। किशनगंज रेलवे स्टेशन पर गाड़ी के पहुंचने तक नायक डार ने संदिग्ध व्यक्ति को पूरे काबू में रखा और स्टेशन पर पहुंचने पर उन्होंने उसे पुलिस अधिकारियों के हवाले कर दिया। अपने धैर्य और साहस पूर्ण कार्य से नायक मोहम्मद डार ने रेलवे डिब्बे में सवार सैनिकों सहित अन्य यात्रियों की जान को पैदा हुए खतरे को टाल दिया।

इस कार्य में नायक मोहम्मद डार ने बड़ी वीरता का प्रदर्शन किया ।

4. श्री श्रीकृष्ण किरार, (**मरणोपरांत**) ।
श्री प्रीतम किरार,
ग्राम सहसराम,
जिला मुरैना,
मध्य प्रदेश ।

सर्वश्री श्रीकृष्ण किरार और प्रीतम किरार ने डाकू नाथू सिंह के गिरोह के सम्बन्ध में गुप्तचरी करने और उनका पता ढूंढ निकालने मे पुलिस की सहायता करने के लिए अपनी सेवाएं प्रस्तुत कीं। इस गिरोह मे आधुनिक हथियारों से लैस भयंकर अपराधी थे जो निर्दयतापूर्वक हत्याएं करने के लिए कुख्यात थे। इन्होंने इस गिरोह का पता लगा लिया और 18/19 फरवरी, 1970 की रात्रि को पुलिस को गिरोह के बारे मे ठीक सूचना दी ये अपने लाइसेंन्स युक्त हथियारों सहित पुलिस दल के साथ गये। 19 फरवरी 1970 की प्रातः डाकुओं के साथ मुठभेड़ हुई । इस मुठभेड़ के दौरान अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए ये आगे बढ़े और डाकुओं की गतिविधि के बारे मे पुलिस को आवश्यक सूचना देते रहे। खेतों और नालों में डाकुओं को ढूंढ निकालने मे इन्होंने पुलिस की सहायता की । अन्ततः ये उन डाकुओं को खोज निकालने में सफल हो गये, जो कि भाग निकलने के विचार से छिपे हुए थे। मुठभेड़ मे डाकुओं के गिरोह के नेता छोटा नाथू सहित 9 डाकू मारे गए तथा एक स्वय भरने वाली अर्द्ध-स्वचलित, राइफ, एक स्टेनगन, पांच.303 राइफलें आदि चीजें हाथ लगीं। इसके अलावा एक डाकू जीवित पकड़ा गया था । बाद में श्री कृष्ण किरार कुछ बदमाशों द्वारा मार डाले गए।

सर्वश्री श्री कृष्ण किरार तथा प्रीतम किरार ने उच्चकोटि की वीरता और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

सं० 37-प्रेज/73—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियो को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की संक्रियाओं में वीरता के लिए 'वीर चक्र' प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. विंग कमांडर (अब ग्रुप कैप्टेन) मन मोहन सिंह (4023)
उड़ान (पायलट)

विंग कमांडर (अब ग्रुप कैप्टेन) मन मोहन सिंह को जनवरी, 1951 में भारतीय वायुसेना में कमीशन प्रदान किया गया था। दिसम्बर, 1971 के भारत-पाक संघर्ष के दौरान, वे पूर्वी क्षेत्र मे एक संक्रियात्मक लड़ाकू स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे। उनके स्क्वाड्रन ने निकट सहायता और पोत परिवहन-रोधी कार्यों के लिए बंगला देश में कुल 110 उड़ानें भरी और वायुयानों को किसी प्रकार की हानि पहुंचे बिना, अपनी तमाम संक्रियात्मक जिम्मेदारियां पूरी कीं। उन्होंने स्वयं 19 उड़ानों का नेतृत्व किया और भारी जमीनी गोलाबारी के बावजूद शत्रु के मोर्चों, गन बोटों और जलयानों पर सफलतापूर्वक आक्रमण किए। जब मेघना नदी के पार हैलीकाप्टरों से सेना पहुंचाने की संक्रियाएं प्रारम्भ हुईं तो उनके स्क्वाड्रन ने इस कार्य की सफलता के लिए प्रभावी वायु-रक्षावरण प्रदान किया। इसके अतिरिक्त उनके स्क्वाड्रन ने अगरतला क्षेत्र में थलसेना को कुशलतापूर्वक निकट सहायता पहुंचाने का कार्य भी किया, हालांकि इसके लिए उन्हें अगरतला के छोटे से दौड़-पथ से उड़ना पड़ता था।

संक्रियाओं की पूरी अवधि के दौरान उन्होंने अनुकरणीय साहस और उच्चकोटि की कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

2. स्क्वाड्रन लीडर (अब विंग कमांडर) धीरेन्द्र सिंह जाफा,
वी० एम० (4819),
फ्लाइंग (पायलट)

दिसम्बर 1971 मे पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान स्क्वाड्रन लीडर धीरेन्द्र सिंह जाफा ने पश्चिमी क्षेत्र में एक लड़ाकू बम वर्षक स्क्वाड्रन में काम किया था। 4 दिसम्बर 1971 को जब शत्रु ने सुसैनीवाला क्षेत्र हमारी एक बटालियन को घेर लिया और वे टैंकों को बहुत करीब ले आये तो उन्होंने इस क्षेत्र में दो वायुयानों की एक टुकड़ी का नेतृत्व किया और 12 बार हमले किये । इन्होंने स्वयं शत्रु के सात टैंक और एक जीप नष्ट की । इस कार्यवाही से शत्रु के आक्रमण को बड़ा धक्का लगा और हमारे घिरे हुए सैनिक कम से कम हानि उठाते हुए, घेरे से निकलने में सफल हो गए। 5 दिसम्बर, 1971 को अह अमृतसर के पश्चिम में एक क्षेत्र से शत्रु हमारे ठिकानों पर लगातार गोलियां बरसा रहा था। शत्रु के तोप ठिकानों पर हमला करने के लिए उन्हें चार वायुयानों के सब सेक्शन लीडर के रूप में भेजा गया। नीचे जमीन से शत्रु की गनों से होने वाली भारी गोली वर्षा के बावजूद, इन्होंने सफल हमले किये और छटे हमले में इनका वायुयान जमीनी गोलीबारी का निशाना बन गया और बहुत कम ऊंचाई से इन्हें वह वायुयान छोड़ना पड़ा।

इस कार्यवाही में स्क्वाड्रन लीडर धीरेन्द्र सिंह जाफा ने उच्चकोटि की वीरता और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

3. मेजर दीपक कुमार गांगुली (आई० सी०-18120)
महार रेजीमेंट (बोर्डर्स)

(**मरणोपरांत**)

मेजर दीपक कुमार गांगुली को लीपा घाटी में एक रक्षित इलाके में कुमुक पहुंचाने का आदेश मिला और वे शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद अपने जवानों को लेकर दिन दहाड़े वहां तक पहुंच गए। दुश्मन ने दो जोरदार हमले किये, लेकिन भारी जानी नुक्सान पहुंचा कर उसे पीछे धकेल दिया गया। कम्पनी की नफरी मे कमी आ जाने के बावजूद वे अपने जवानों को निरंतर लड़ने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। दुश्मन की भारी गोलाबारी के बावजूद अपनी जान की तनिक भी परवाह न करके अपने सभी मोर्चों तक गए। जब शत्रु ने बहुत भारी तादाद मे हमला किया तो इनकी कम्पनी मजबूरन पीछे हटकर अपनी चौकी पर आ गई। मशीनगन के चालकों में से एक जवान के घायल होने पर उसकी जगह इन्होंने सम्हाल ली और तब तक गोलाबारी करते रहे जब तक कि इनके सारे जवान पीछे न हट गए। यद्यपि घायल हो गये थे तथापि वे उस समय तक गोलीबारी करते रहे जब तक कि उनके

सारे जवान पीछे न हट गये। चौकी पर वे ही अन्तिम व्यक्ति थे जो मशीनगन से गोलीबारी करते हुए घातकरूप से घायल हो गये।

इस कार्यवाही के दौरान मेजर दीपक कुमार गांगुली ने उच्चकोटि की वीरता और नेतृत्व का परिचय दिया।

4. कैप्टन हमीर सिंह (आई०-सी०-13935), ग्रेनेडियर्स।

13/14 1971 दिसम्बर की रात्री को कैप्टन हमीर सिंह पश्चिमी क्षेत्र में दारुचियां पर आक्रमण के दौरान ग्रेनेडियर्स की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे। इनकी कम्पनी को लक्ष्य के पश्चिमी छोर पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। ये अपनी कम्पनी को शत्रु के क्षेत्र में काफी दूर तक ले गए और निर्धारित लक्ष्य पर हमला बोल दिया। शत्रु हक्का-बक्का रह गया और उस जगह पर कब्जा कर लिया गया। लक्ष्य के कुछ और स्थानों पर कब्जा करने के उद्देश्य से ये अपने जवानों को लेकर आगे बढ़े लेकिन शत्रु के बंकरों तथा पिलबाक्सों से गोलीबारी शुरू हो गई। ये उससे जरा भी विचलित न हुए और आगे बढ़ते गए और लक्ष्य के कुछ और स्थानों पर कब्जा कर लिया। जब इनके सैनिक और आगे नहीं बढ़ सके तो इन्होंने उन्हें तत्काल आदेश दिया कि वे शत्रु के दिन में होने वाले हमले का मुकाबला करने के लिए तैयार रहें। शत्रु आशा के विपरीत पहले ही पहुंच गया और उसने जवाबी हमले शुरू कर दिये। लेकिन इन्होंने उन सभी हमलों को विफल कर दिया। बाजू और छाती में गोलियों के कई घाव लगने पर भी वे शान्त रहे और इन्होंने बड़े धैर्य से काम लिया और प्रतिकूल परिस्थितियों में तथा स्वचालित अस्त्रों और तोपों से की जा रही भारी गोलीबारी के बीच भी इन्होंने धैर्य से काम लिया। जब इनके जवानों की संख्या बड़ी तेजी से कम हो रही थी तो खतरनाक जगह बने पिल-बाक्स को नष्ट करने के लिए हवाई हमले की व्यवस्था की गई। जब वायुयान से पिल-बाक्स पर गोले बरसाए तो इन्होंने अपनी कम्पनी हैडक्वार्टर के सैनिकों तथा तोपखाना अग्रेप्रेक्षण अफसर दल के साथ शत्रु के बंकर पर हमला बोल दिया। घटती हुई संख्या शक्ति और शत्रु की भारी गोलीबारी के बावजूद भी इन्होंने अपने व्यक्तिगत साहस और लगन शीलता से अपने सैनिकों में अपने स्थान पर मजबूती से डटे रहने की भावना पैदा की।

इस कार्यवाही में कैप्टन हमीर सिंह ने उच्चकोटि की वीरता और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

5. फ्लाइट लैफ्टिनेन्ट अपरमजीत सिंह (7403), उड़ान (पायलट)।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अपरमजीत सिंह को जून, 1963 में भारतीय वायुसेना कमीशन में प्रदान किया गया। दिसम्बर, 1971 के भारत पाकिस्तान संघर्ष के दौरान उन्होंने शत्रु क्षेत्र के बहुत भीतर तक मार्ग रक्षण और स्वीप मिशन की कुल 21 संक्रियात्मक उड़ानें भरीं। 8 दिसम्बर, 1971 को जब वे छम्ब क्षेत्र में नं० 2 के रूप में उड़ान भर रहे थे तो उनकी फार्मेशन को शत्रु की भारी जमीनी गोलाबारी का सामना करना पड़ा, जिसमें फार्मेशन के नेता का वायुयान मार गिराया गया। उनके अपने वायुयान पर गोले लगे और उसे भारी क्षति पहुंची। वायुयान के बायें डैने को क्षति पहुंचने और बहुत सी अन्य प्रणालियों के खराब हो जाने के कारण उनका वायुयान पर नियन्त्रण बिगड़ता जा रहा था, इसके बावजूद उन्होंने वायुयान को सुरक्षित रूप से हवाई अड्डे पर ले आने में अनुकरणीय और कौशल और साहस का परिचय दिया।

इस कार्यवाही में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अपरमजीत सिंह ने उच्चकोटि की वीरता और व्यवसायिक कुशलता का परिचय दिया।

6. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट मेलविन्द्र सिंह ग्रेवाल (7728), फ्लाइंग (पायलट)।

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट मेलविन्द्र सिंह ग्रेवाल पश्चिम क्षेत्र में एक लड़ाकू बमवर्षक स्क्वाड्रन में सेवा कर रहे थे। 4 दिसम्बर 1971 को इन्हें शत्रु के हवाई अड्डे 'शोरकाट रोड' के ऊपर हमला करने वाले चार वायुयानों के एक मिशन के सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया था। इन्होंने भूमि पर खड़े एक वायुयान को नष्ट करके तथा बिल्डिंग को नुक्सान पहुंचा कर अपना मिशन सफलतापूर्वक पूरा किया। उसी दिन शाम को इन्होंने एक अन्य प्रहार मिशन पूरा किया। उसी हवाई अड्डे के ऊपर इन्होंने भारी विमान भेदी गोलाबारी के बावजूद हमला जारी रखा। लेकिन इस हमले के दौरान इनका वायुयान भूमि से होने वाली गोलीबारी का निशाना बन गया और नष्ट हो गया।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट मेलविन्द्र सिंह ग्रेवाल ने उच्चकोटि की वीरता और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

7. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट आदित्य विक्रम पेठिया (8384), फ्लाइंग (पायलट)।

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट आदित्य विक्रम पेठिया ने पश्चिमी क्षेत्र में एक लड़ाकू बमवर्षक स्क्वाड्रन में कार्य किया था। 5 दिसम्बर 1971 को शत्रु की बख्तरबन्द गाड़ियों का पता लगाने और उन्हें नष्ट करने के लिए इन्हें चिस्तियां मंडी के ऊपर सामरिक टोह लगाने का काम सौंपा गया था। इन्होंने ऊपर से देखा कि भावल नगर की ओर एक रेल गाड़ी जा रही है जिसमें 15 टैंक हैं। भूमि से शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद इन्होंने गाड़ी पर दो बार हमला किया और शत्रु की दो गाड़ियां नष्ट करदी। इन्होंने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किये बिना शत्रु की विमान भेदी तोपों को नष्ट करने के लिए एक और आक्रमण किया। लेकिन इस आक्रमण में इनका वायुयान शत्रु की गोली का निशाना बन गया और नष्ट हो गया।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट आदित्य विक्रम पेठिया ने उच्चकोटि की वीरता और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

8. 1616 असिस्टेंट कमांडेंट नफे सिंह दलाल,
सीमा सुरक्षा दल।

(मरणोपरान्त)

असिस्टेंट कमांडेंट नफे सिंह दलाल पश्चिमी क्षेत्र के एक स्थान पर सीमा सुरक्षा दल की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे। जब शत्रु ने इस इलाके में मोर्चे बनाने शुरू किए तो उन्हें एक गश्ती प्लाटून का नेतृत्व करने और हमारी सीमा में शत्रु को घुसने से रोकने का आदेश मिला। जब गश्ती दल का अग्रिम दस्ता शत्रु की पोजीशन से लगभग 50 गज फासले पर था तो उस पर स्वचालित और छोटे हथियारों से भारी गोलीबारी होने लगी। श्री दलाल ने हल्की मशीनगन खुद सम्भाल ली और वे आगे बढ़ कर शत्रु की उस मझौली मशीनगन पर गोलीबारी करने लगे, जिसकी गोलियां गश्ती दल पर सीधी पड़ रही थीं। उन्होंने शत्रु की मंझौली मशीनगन को खामोश कर दिया, लेकिन दूसरी दिशा से मझौली मशीनगन से गोलियों की एक बौछार इन पर पड़ी। वे गम्भीर रूप से घायल और लहुलुहान हो गए थे, लेकिन इसके बावजूद वे तब तक अपनी हल्की मशीनगन से गोलीबारी करते रहे, जब तक उनके सभी जवान दूसरी पोजीशन पर पीछे न हट गए। किन्तु घावों की वजह से वे वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में असिस्टेंट कमांडेंट नफे सिंह दलाल ने उच्चकोटि की वीरता और नेतृत्व का परिचय दिया।

9. फ्लाइंग अफसर करियादिल चेरियान कुरुविल्ला (10862),
फ्लाइंग (पायलट)।

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान फ्लाइंग अफसर करियादिल चेरियान कुरुविल्ला पश्चिमी क्षेत्र में एक लड़ाकू बमवर्षक स्क्वाड्रन में कार्यरत थे। 4 दिसम्बर 1971 को इन्होंने चन्द्र हवाई अड्डे के ऊपर हवाई हमला किया और सफलतापूर्वक भूमि पर शत्रु के वायुयान तथा हवाई संस्थानों को क्षति पहुंचाई। 5 दिसम्बर 1971 को इन्होंने चेरितयान मंडी के ऊपर हवाई हमला करने के लिए उड़ान भरी और शत्रु की भारी विमान भेदी गोलाबारी के बावजूद एक रेलगाड़ी और उसके इंजन को भारी नुक्सान पहुंचाया। पुनः 6 दिसम्बर 1971 को इन्होंने डेरा बाबा नानक पर हवाई हमला करने के लिए उड़ान भरी और शत्रु के टैंकों के जमाव पर हमला किया। लेकिन लक्ष्य से दुबारा गुजरते समय इनका वायुयान शत्रु की विमान भेदी गोलियों का निशाना बन कर नष्ट हो गया।

आद्योपान्त फ्लाइंग अफसर करियादिल चेरियान कुरुविल्ला ने उच्चकोटि की वीरता तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

10. 3340727 नायब सूबेदार ज्ञान सिंह,
सिख रेजिमेंट।

(मरणोपरान्त)

नायब सूबेदार ज्ञान सिंह को अमृतसर क्षेत्र में युद्ध विराम रेखा के साथ-साथ टोह के लिए एक गश्ती दल में भेजा गया। गश्तीदल अभी युद्ध विराम रेखा से लगभग 50 गज दूर था कि शत्रु ने भारी स्वचालित और छोटे हथियारों से गोलीबारी शुरू कर दी। अपनी जान की तनिक भी परवाह न करके वे तेजी से आगे बढ़े और एक बंध की आड़ में जाकर जवाब में गोली चलाने लगे। वे छुपे-छुपे लगातार अपनी पोजीशन बदलते रहे और तीन तरफ से शत्रु के होने के बावजूद इन्होंने सूझ-बूझ और साहस से काम लेकर शत्रु को लगातार उलझाए रखा। फलस्वरूप शत्रु ज्यादातर इन पर ही गोलीबारी करता रहा और जिससे गश्तीदल के बाकी जवानों को आड़ में आने और स्थिति से निपटने का अवसर मिल सका। इस शूरवीरतापूर्ण कार्यवाही में मझौली गन की गोलियों की एक बौछार इन पर पड़ी लेकिन वे शत्रु पर आखरी दम तक गोली चलाते रहे और बाद में घावों के कारण वे वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में नायब सूबेदार ज्ञान सिंह ने उच्चकोटि की वीरता, दृढ़-निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया।

11. सं० 3144100 हवलदार अमर सिंह,
जाट रेजिमेंट।

हवलदार अमर सिंह को आदेश दिया गया कि वे शत्रु के उस गश्तीदल से निपटने के लिए अपना एक गश्तीदल ले जाएं जो हमारी सीमा के भीतर जम्मू और काश्मीर क्षेत्र में एक अग्रिम रक्षित इलाके तक घुस आया था। अनेक कठिनाइयों के बावजूद इन्होंने अपने गश्तीदल का नेतृत्व किया और जब वे शत्रु के गश्ती दल से 150 गज के फासले पर थे तो उनपर हल्की मशीनगन और 2 इंची मार्टर से गोलीबारी की जिससे शत्रु के तीन जवान मारे गए। शत्रु ने भी इनके गश्तीदल पर मझौली मशीनगन और तोपखाने से गोलाबारी की। अपनी सीमा में घुस आए शत्रु को खदेड़ने के बाद बड़े साहस और धैर्य से इन्होंने अपने गश्ती दल को वहां से हटाया। यद्यपि उनके बाएं बाजू और बाईं टांग पर शत्रु की मझौली मशीनगन की गोलियों की एक बौछार पड़ी। तथापि अपने घावों की परवाह न करते हुए वे हिम्मत और जीदारी से अपने गश्तीदल का नेतृत्व करते रहे। बाद में पता चला कि उनके बाजू और टांग में गोलियों के 6 घाव थे।

इस कार्यवाही में हवलदार अमर सिंह ने उच्चकोटि की वीरता और नेतृत्व का परिचय दिया।

12. 920765 सिपाही खड़क सिंह,
महार रेजिमेंट (बोर्डर्स)। (मरणोपरान्त)

सिपाही खड़क सिंह महार रेजिमेंट की एक बटालियन की उस अग्रिम प्लाटून में थे जो लीपा घाटी में शत्रु से लड़ रही थी। प्लाटून ज्यों ही करीब पहुंची, शत्रु ने भारी स्वचालित और छोटे हथियारों से गोलाबारी शुरू कर दी। अपनी जान की जरा भी परवाह न करके घायल होने के बावजूद वे रेंगते हुए आगे बढ़े और शत्रु के पास पहुंच कर उन्होंने बंकर में एक हथगोला उछाल दिया, जिससे शत्रु के बहुत से जवान हताहत हो गए। बुरी तरह से लहूलुहान होने के बावजूद वे दूसरे बंकर की तरफ बढ़े और जब वे उसमें हथगोला फैंक रहे थे तो शत्रु की स्वचालित हथियारों की गोलीबारी से घायल हो गये जिससे वे वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में सिपाही खड़क सिंह ने उच्चकोटि की वीरता और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

सं० 38-प्रेज़/73—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को वीरता के लिए "शौर्य चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री बी० एस० गिल, कनिष्ठ अभियंता,
केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग,
हवाई अड्डा,
अमृतसर।

श्री बी० एस० गिल अमृतसर हवाई अड्डे में राजसंसी की मरम्मत दल के प्रभारी अधिकारी थे। 3 दिसम्बर, 1971 को पाकिस्तानी वायु सेना के पूर्वक्रमिक आक्रमण के दौरान इन्होंने अपने आदमियों को सामान की सहायता से काम पर लगा कर हवाई अड्डे पर हुए पांच बड़े खड्डों को भरने का कार्य पूरा किया। ये एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा कर अपने आदमियों को तेजी से कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। जब ये मरम्मत कार्य में जुटे हुए थे, तब शत्रु के एक बम वर्षक जहाज ने पुनः दौड़पथ पर छः बम गिरा दिए। हवाई हमले के दौरान श्री गिल ने अपने आदमियों को तितर-बितर कर दिया किन्तु उसके तत्काल बाद ही उन्हें एकत्रित कर उसी तेजी से पुनः कार्य चालू कर दिया। 3 दिसम्बर, 1971 को शत्रु के हवाई आक्रमण में ही नहीं, बल्कि हर बार जब भी शत्रु के हवाई हमले से दौड़-पथ क्षतिग्रस्त होता था ये अपने प्रेरणादायक नेतृत्व तथा साहस से मरम्मत कार्य बहुत कम समय में ही पूरा करवा लेते थे।

आद्योपान्त श्री बी० एस० गिल ने धीरता एवं दृढ़-निश्चय का परिचय दिया।

2. श्री श्री किशन शर्मा, ड्राइवर उत्तरीय रेलवे,
जोधपुर।

श्री श्री किशन शर्मा उत्तरीय रेलवे के जोधपुर डिवीजन में एक लोकोमोटिव ड्राइवर थे। जैसे ही भारतीय सेना की बढ़ती हुई यूनिटों ने शत्रु के प्रदेश में खोखरापार रेलवे स्टेशन पर कब्जा किया, वैसे ही आगे बढ़ती हुई सेनाओं के लिए और आगे रेल संचार व्यवस्था की गई। ये उस रेल गाड़ी के प्रथम ड्राइवर थे जो जवानों के लिए महत्वपूर्ण सामग्री ले जा रही थी। जब रेल खोखरापार में शंटिंग कर रही थी तब वहां पर शत्रु अपने वायुयान से बार-बार बमबारी एवं गोलीबारी कर रहा था जिससे काफी रेल डिब्बे नष्ट हो रहे थे। ये बड़ी निर्भीकता से अपनी ड्यूटी करते रहे और उन डिब्बों को सुरक्षित स्थानों में ले जाने में सफल हो गए। उन्होंने अपनी गाड़ी को वापस मुनाबाओं ले जाने से पूर्व पानी के टैंकों तथा महत्वपूर्ण सामग्री से भरे रेल डिब्बों को यथा स्थान पहुंचाया।

इस कार्यवाही में श्री श्री किशन शर्मा ने साहस तथा उच्च-कोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

3. श्री रूप चन्द, स्थायी पथ निरीक्षक,
उत्तरीय रेलवे,
जोधपुर डिवीजन

श्री रूप चन्द उत्तरीय रेलवे के जोधपुर डिवीजन में एक स्थायी पथ निरीक्षक थे। खोखरापार स्टेशन पर कब्जा होते ही रेलवे के जोधपुर डिवीजन को यह आदेश दिया गया कि आगे बढ़ती हुई सेनाओं के लिए लगभग 11 मील दूर शत्रु प्रदेश में तुरन्त रेल लाईन बिछाई जाय। श्री रूप चन्द ने अपने दल के साथ इस चुनौती पूर्ण कार्य को हाथ में लिया तथा बार-बार हवाई आक्रमणों के होते हुए भी उस कार्य को बहुत ही कम अवधि में पूरा कर दिखाया।

इस कार्यवाही में श्री रूप चन्द ने साहस तथा उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

4. श्री ओ० पी० चोपड़ा, सहायक अभियंता,
उत्तरीय रेलवे,
जोधपुर।

श्री ओ० पी० चोपड़ा, जोधपुर तथा मुनाबाओं के बीच की रेल-लाईन के एक भाग के प्रभारी सहायक अभियंता थे। 1971 में पाकिस्तान के साथ संघर्ष के दौरान इस लाईन पर भारी संख्या में विशेष सैनिक रेल गाड़ियां चलाई गई थीं। इन्होंने शत्रु के बार-बार होने वाले हवाई हमलों तथा भारी क्षति के बावजूद रेल-लाईन को सही हालत में रखा। खोखरापार स्टेशन पर कब्जा होने के उपरान्त, इनके डिवीजन को शत्रु के प्रदेश में आगे बढ़ती हुई सेना के लिए बड़ी तेजी से रेल संचार व्यवस्था बनाने का काम दिया गया यद्यपि पीछे हटती हुई शत्रु सेना ने रेलवे लाईन तथा पुल पूर्णतः नष्ट कर दिए थे और उसके हवाई हमले बराबर होते जा रहे थे लेकिन इनकी देख-रेख में रेल संचार व्यवस्था बहुत ही कम समय में तैयार हो गई।

आद्योपान्त श्री ओ० पी० चोपड़ा ने साहस तथा उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

5. श्री जोगेश चन्द्र दास।

श्री जोगेश चन्द्र दास 1971 में भारत-पाक संघर्ष के दौरा मेघालय के गारो पहाड़ी नामक जिले में अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के समीप कार्य कर रहे थे।

जब मैमन सिंह जिले में कमालपुर के पूरी तरह रक्षित शत्रु चौकी पर अधिकार करने के सारे प्रयत्न विफल हो गए तो श्री दास, ने बड़ा जोखिम उठा कर बूबी ट्रैप्स, पंजीज सुरंग क्षेत्रों तथा खाइयों की सही दिशा दिखाने वाले नक्शे तैयार किए। इसके बाद जब कमालपुर चौकी का घेरा डाला गया तो शत्रु और अधिक कुमुक लेकर उस ओर आ बढ़ा और उसने भारतीय अग्रिम चौकी से आधा किलोमीटर दक्षिण में स्थित गोपालपुर के एक नाले में जाकर पोजीशन ली। इस बात का संकेत पाकर श्री दास ने जोखिम उठा कर बड़ी शीघ्रता से सही स्थिति का पता लगाया और शत्रु द्वारा की जा रही भारी गोलाबारी की तनिक भी परवाह न करते हुए, ये भारतीय चौकी की ओर भागे और चौकी के कम्पनी कमाण्डर को सही स्थिति की सूचना दी हमारे सैनिकों ने तत्काल उस क्षेत्र में तोपखानों से भरी गोला बारी की और शत्रु की ओर से आकस्मिक रूप से होने वाले आक्रमण को नाकाम किया। बाद में होने वाली कार्यवाही में शत्रु के 18 सैनिक मारे गए तथा शेष भाग गये।

इस प्रकार श्री जोगेश चन्द्र दास ने शत्रु की इस चौकी पर अन्ततः अधिकार करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

6. श्री चिरोंजी
श्री जालिम
श्री मुकुन्दी
श्री बदरी
श्री बलवन्त
} ग्राम चन्द्रपुर, जिला मुरैना, मध्य प्रदेश।

18/19 अप्रैल 1970 की रात्रि को एम० एल० बन्दूकों से लैस डाकुओं के एक गिरोह ने चन्द्रपुर गांव पर अचानक आक्रमण करके ग्रामीणों को स्तम्भित कर दिया और वे गांव के सभी हृष्ट-पुष्ट व्यक्तियों को एक स्थान पर ले गए, जहां पर एक डाकू भरी हुई बन्दूक लेकर उन पर निगरानी करने लगा और शेष डाकुओं ने सर्वश्री हजारी, जालिम, बदरी और राम स्वरूप के घरों को लूटना शुरू कर दिया और जबरदस्ती स्त्रियों के गहने उतारने शुरू कर दिये। इस बात को समझते हुए भी कि डाकुओं के पास बन्दूकें होने के कारण वे भारी पड़ेंगे, श्री हजारी अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए इस डाकू पर झपट पड़े और उसे दबोच लिया। डाकू ने अपनी बन्दूक से उस पर गोली चलायी लेकिन श्री हजारी ने बन्दूक का मुंह एक ओर कर दिया और उसे छीन लिया। इससे अन्य ग्रामीण सर्वश्री चिरोंजी, जालिम, मुकुन्दी, बदरी और बलवन्त में भी जोश आ गया। इन्होंने पास में खड़ी बैल गाड़ियों में से लकड़ी के डंडे निकाल कर डाकुओं पर हमला करना शुरू कर दिया। डाकुओं ने अन्धाधुंध गोली बरसानी शुरू कर दी लेकिन भाग्यवश ये ग्रामीण दो डाकुओं को बुरी तरह घायल करने में सफल हो गए जिनकी बाद में अस्पताल में मृत्यु हो गयी। इस साहसपूर्ण कार्यवाही से डाकू हतोत्साहित हो गए और अपने पीछे दो एम० एल० बन्दूकें और लूटा हुआ माल छोड़कर सिर पर पांव रख कर भाग गए।

इस कार्यवाही में सर्वश्री चिरोंजी, जालिम, मुकुन्दी, बदरी और बलवन्त ने साहस और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

11. 9204775 लांस नायक क्लंदर सिंह
महार रेजिमेंट।

लांस नायक क्लंदर सिंह एक गश्ती दल में थे जिसे 11 सितम्बर, 1972 को नागालैंड में एक विद्रोही कैम्प पर धावा बोलने के लिये भेजा गया था। जब यह दल कैम्प के समीप पहुंच रहा था और लांस नायक क्लंदर सिंह अभी झोपड़ियों से 50 गज की दूरी पर ही थे कि अचानक चार विरोधी बाहर निकल आए और उन्होंने उन पर गोली चला दी। भाग्यवश इनपर गोली नहीं लगी इन्होंने तुरन्त जवाबी गोली चलाई और उस विरोधी को, जिसने यह गोली चलाई थी, मार गिराया। इतने में इनकी कारबाइन खराब हो गई। इन्होंने तुरन्त अपने हथियार को छोड़ कर मृतक विरोधी की राईफल उठा ली और भागते हुए अन्य विरोधियों पर फायर कर एक और उपद्रवी को मार गिराया। दो अन्य विरोधी घायल हो गए थे जो अपने हथियार छोड़ कर जंगल में ओझल हो गए।

इस कार्यवाही में लांस नायक क्लंदर सिंह ने उच्चकोटि के साहस तथा दृढ़-संकल्प का परिचय दिया।

12. श्री दिलीप कुमार देव,
ग्राम जोयनगर, पुलिस स्टेशन कोतवाली,
अगरतला।

श्री दिलीप कुमार देव ने बंगलादेश के भीतर अनेकोंबार जाकर शत्रु सेना की तैयारियों तथा उसकी स्थितियों के सम्बन्ध में उपयोगी सूचना दी थी। उनका कार्य कठिन और जोखिमपूर्ण था, विशेषतया तब जब कि शत्रु सेना तनिक सन्देह पड़ने पर ही असैनिकों की हत्या कर देती थी। इनकी सबसे अधिक उल्लेखनीय उपलब्धि यह थी कि ये एक हवाई अड्डे के साथ-साथ उसकी सारी रक्षा व्यवस्था प्रतिष्ठानों का खाका बनाकर लाए। इन्होंने ढाका तथा उसके आसपास शत्रु के ठिकानों के पूरे ब्यौरे उपलब्ध किए, जो बंगलादेश में संक्रियात्मक कार्यवाहियों के लिए काफी उपयोगी सिद्ध हुए।

आद्योपान्त श्री दिलीप कुमार देव ने उच्चकोटि का साहस और दृढ़-संकल्प का परिचय दिया।

13. श्री प्रफुल्ल रंजन सेन गुप्त, मैनेजर,
सिमना टी गार्डन,
त्रिपुरा।

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान श्री प्रफुल्ल रंजन सेन गुप्त ने टी गार्डन में अपने मजदूरों के द्वारा सीमा सुरक्षा दल को शत्रु के सम्बन्ध में बहुत महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करने में और संक्रियाओं की योजना बनाने में काफी सहायता दी। इससे शत्रु के सैनिकों और रजाकारों द्वारा पीछे भागते समय छोड़े गए क्षेत्रों का सफाया करने में मदद मिली और परिणाम स्वरूप कई रजाकारों को बन्दी बनाया गया एवं कई राइफल हाथ लगीं। पाकिस्तानी सेनाओं द्वारा भारी गोलाबारी होने के बावजूद श्री सेन गुप्त अपने स्थान पर डटे रहे और वहां के लोगों को भी अपने स्थानों जमे पर रहने के लिए उत्साहित करते रहे।

आद्योपान्त श्री प्रफुल्ल रंजन सेन गुप्त ने अद्वितीय साहस और दृढ़-संकल्प का परिचय दिया।

14. श्री धीरेन्द्र सेन गुप्ता, सोनापुरा नगर,
त्रिपुरा।

श्री धीरेन्द्र सेन गुप्ता, सोनापुरा नगर के नागरिक सुरक्षा समिति के सदस्य थे और उनका अपना एक औषधालय भी था। अनेकों बार इस नगर पर शत्रु ने बमबारी की। उन्होंने नगर में जगह-जगह जा कर लोगों को इस खतरे का साहस के साथ मुकाबला करने के लिए प्रोत्साहित किया। जबकि तमाम बाजार वीरान था इन्होंने अपने औषधालय को उस समय भी खोले रखा ताकि लोग औषधियां ले सकें तथा बमबारी के दौरान घायलों का प्रथमोपचार किया जा सके।

इस प्रकार श्री धीरेन्द्र सेन गुप्ता ने साहस तथा उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

15. श्री सुनील बरन डे,
सोनामुरा नगर
त्रिपुरा।

पाकिस्तानी सेनाओं के द्वारा लगातार गोलाबारी के कारण जब सोनामुरा नगर प्रायः सूना पड़ गया तो श्री सुनील बरन डे ने नगर में एक रक्षा दल बनाया और रातभर नगर में नियमित रूप से गश्त लगाते रहे और महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की देख-रेख करते रहे ताकि शत्रु कोई तोड़-फोड़ की कार्यवाही न कर सके।

इस प्रकार श्री सुनील बरन डे ने साहस, पहल शक्ति तथा उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

16. श्री सदानन्द गुहा,
सोनामुरा नगर, त्रिपुरा।

शत्रु द्वारा सोमामुरा नगर पर रुक-रुक कर गोलाबारी के दौरान, जब अधिकांश लोग अपने घरों को छोड़ कर दूसरे स्थानों पर चले गए थे तो श्री सदानन्द गुहा ने स्वयंसेवकों के एक छोटे से दल के साथ नगर में गश्त लगाई तथा तोड़-फोड़ करने वाले पाकिस्तानियों से लोगों की धन-सम्पत्ति की रक्षा की।

इस प्रकार श्री सदानन्द गुहा ने साहस तथा उच्चकोटि की पहल शक्ति का परिचय दिया।

17. श्री रमेश मजूमदार, ग्राम देवीपुर,
त्रिपुरा।

17 अक्टूबर 1971 को रायफलों से लैस चार रजाकार हरीपुर गांव में घुस आए। उन्होंने अपने आपको स्वतंत्रता सेनानी बताकर ग्रामीणों से सहायता मांगी। श्री रमेश मजूमदार ने यह भांप लिया कि तोड़-फोड़ करने वाले हैं। यद्यपि रजाकार सशस्त्र थे फिर भी श्री मजूमदार ने उन्हें तत्काल पकड़ने का प्रयास किया तथा साथ ही सहायता के लिए शोर मचाया। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना तथा मदद के लिए किसी भी व्यक्ति के न आने पर भी इन्होंने एक रजाकार को पकड़ लिया। यद्यपि हाथापाई के दौरान इन्हें गंभीर घाव आए फिर भी ये रजाकारों को खदेड़ने में सफल हो गए, जो कि अपने पीछे राइफलें छोड़ गए और इस प्रकार इन्होंने उस क्षेत्र में कोई दुर्घटना नहीं होने दी।

इस कार्यवाही में श्री रमेश मजूमदार ने उच्चकोटि के साहस का परिचय दिया।

18. श्री जदुनन्दन दत्ता,
सैक्रेट्री, बेलोनिया बार एसोशिएसन,
त्रिपुरा।

जब सीमावर्ती नगर बेलोनिया पर पाकिस्तानी सेना रुक-रुक कर गोलाबारी कर रही थी तब यह आवश्यक हो गया था कि जनता को नागरिक सुरक्षा के उपाय अपनाने के लिए तैयार किया जाये और उनका हौसला ऊंचा बनाए रखा जाये। इस कठिन कार्य को पूरा करने के लिए श्री जदुनन्दन दत्ता आगे आए। नगर पर मार्टर तथा तोपखानों की गोलाबारी के बावजूद ये घर-घर गये तथा समुचित पूर्वीपायों के लिए लोगों को तैयार किया।

आद्योपान्त श्री जदुनन्दन दत्ता ने उच्च कोटि के साहस तथा पहल शक्ति का परिचय दिया।

19. डा० रविन्द्र नाथ चौधरी,
मेडिकल अफसर इन्चार्ज, प्राइमरी हैल्थ सैन्टर,
हरिश्यामुख (बेलोनिया),
त्रिपुरा।

डा० रविन्द्र नाथ चौधरी प्रारम्भिक स्वास्थ्य केन्द्र, हरिश्यामुख (बेलोनिया) के मेडिकल अफसर-इन-चार्ज, थे, जो सीमा से केवल 80 गज़ दूर था। इस क्षेत्र पर पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा भारी गोले बरसाये जा रहे थे। एक बार जब ये किरचों से बुरी तरह घायल तीन व्यक्तियों की शल्य-चिकित्सा कर रहे थे, तो शत्रु ने गोले बरसाना शुरू कर दिया और गोले प्राइमरी हैल्थ सैन्टर के बिल्कुल पास गिर रहे थे। अविचिलित उन्होंने उसकी शल्यचिकित्सा की और तीनों घायलों के प्राणों की रक्षा करने में सफल हुए। एक और बार सैन्टर पर गोलीबारी होते हुए भी इन्होंने पुनः एक और व्यक्ति के गोली के घावों का आपरेशन किया।

इस प्रकार डा० रविन्द्र नाथ चौधरी ने उच्च कोटि के साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

20. डा० प्रेम सागर गर्ग,
सीनियर मैडिकल अफसर,
फाजिल्का।

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान डा० प्रेम सागर गर्ग ने युद्ध में हताहत उन लोगों की जिनका तत्काल इलाज करना आवश्यक था, देखभाल करने के लिए आर्मी मेडिकल तथा सर्जिकल टीम को अपनी सेवाएं अर्पित कीं। इन्होंने आर्मी सर्जन के साथ दिन-रात काम किया और कठिन तथा युद्ध कालीन स्थितियों के दौरान युद्धहताहतों का इलाज किया। सैनिक चिकित्सकों के लिये ये प्रेरणा के स्रोत रहे।

इस प्रकार डा० प्रेम सागर गर्ग ने अद्वितीय साहस और और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

21. श्री चलिल पुथियापुरायिल नारायणन
असिस्टैंट आर्मामैन्ट सप्लाई, अफसर

श्री चलिल मुथियापुरायिल नारायणन, असिस्टैंट आर्मामैन्ट सप्लाई अफसर को जनवरी 1972 में बंगलादेश के चिटगांव तथा कोक्स बाजार क्षेत्रों में नौसेना के दस बिना फटे बमों को नष्ट करने का कार्य सौंपा गया था। इस अत्यन्त जोखिमपूर्ण कार्य को इन्होंने बड़ी खुशी से अपने हाथ में लिया। अपने उच्च कोटि के व्यावसायिक ज्ञान तथा साथ में बम निपटान दल की सहायता से इन्होंने एक बम जो चिटगांव के रेलवे मुख्यालय भवन के ऊपर गिरा था

को छोड़ कर शेष सभी बमों का फ्यूज निकाल कर उन्हें निरापद कर दिया । इस बम की टेल अलग हो गई थी । अतः उसका फ्यूज नहीं निकाला जा सका था । उसे नष्ट करने का एक तरीका तो यह था कि उसे उसी स्थान पर विस्फोटित कर दिया जाये लेकिन ऐसा करने से रेलवे मुख्यालय तथा उसके आसपास के अनेकों भवन नष्ट हो सकते थे अथवा दूसरा तरीका यह था कि उसे वहां से उठा कर अन्यत्र खुले में स्थान में ले जा कर नष्ट किया जाये लेकिन ऐसा करना बम निपटान दल के लिए बड़ा जोखिमपूर्ण था । श्री नारायणन ने जान हथेली में लेकर बम को वहां से हटाने का निर्णय किया तथा सफलता पूर्वक उस कार्य को पूरा कर दिया।

इस कार्यवाही में श्री चलिल पुथियापुरायिल नारायणन ने उच्च कोटि के नेतृत्व और साहस का परिचय दिया।

22. श्री एन० रंगाचारी, प्रोफेशनल असिस्टेंट,
प्रोफेशनल अस्टिेंट,
भारतीय मौसम विज्ञान विभाग,
भुज ।

दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान श्री एन० रंगाचारी भुज में स्थित मौसम विज्ञान कार्यालय में सेवारत थे । शत्रु ने अनेकों बार भुज में स्थित हवाई पत्तन पर गोलाबारी की किन्तु उन्होंने शत्रु की इस कार्यवाही के होते हुए भी मौसम विज्ञान कार्यालय को चालू रखा । ये लगातार अपने कर्मचारियों के साथ रहे तथा इन्होंने स्थानीय वायुसेना स्टेशन और अन्य सिविलियन विभागों के विभागाध्यक्षों के बराबर सम्पर्क बनाये रखा । मौसम विज्ञान विभाग के कर्मचारियों के लिए ये प्रेरणा का स्रोत बने रहे ।

इस प्रकार श्री एन० रंगाचारी ने उच्च कोटि के साहस तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

23. श्री गंडा सिंह गिल,
वरिष्ठ पत्तन अधिकारी,
अमृतसर ।

दिसम्बर 1971 मे पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रियाओं के दौरान श्री गंडा सिंह गिल, अमृतसर के सिविल हवाई अड्डे के वरिष्ठ प्रभारी अधिकारी थे । अमृतसर हवाई पत्तन पर दिन तथा रात्रि मे पाकिस्तानी सवायुसेना ने लगातार हमले किये। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किये बिना तथा अपने ज्येष्ठ पुत्र, जो एक सैनिक अधिकारी थे, की मृत्यु के कारण शोक संतप्त होने पर भी ये उस हवाई पत्तन पर बने रहे और अमृतसर हवाई अड्डे को भारतीय वायुसेना के उपयोग के लिए खुला रखा ।

इस प्रकार श्री गंडा सिह गिल ने इस उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता और साहस का परिचय दिया ।

24. श्री मिहिर कुमार सेनगुप्ता,
हवाई अड्डा अधिकारी,
अगरतला, त्रिपुरा ।

श्री मिहिर कुमार सेनगुप्ता, सिविल हवाई अड्डे अगरतला के प्रभारी अधिकारी थे । 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध संघर्ष के दौरान इन्होंने हवाई अड्डे के निकट बसने वाले शरणार्थियों की ही देख-भाल नहीं की अपितु अपनी प्रशासनिक योग्यता से हवाई अड्डे के निवासियों को भी आतंकित नहीं होने दिया । सीमा पार से शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद श्री सेनगुप्ता ने घर-घर जाकर वहां के निवासियों में आत्मविश्वास पैदा किया । अपने साहस तथा कर्तव्यपरायणता के कारण इन्होंने लोगों को अगरतला तथा भारत-पाकिस्तान सीमा पर स्थित अन्य हवाई अड्डे खाली करने से रोका और अगरतला हवाई अड्डे को चालू रखा तथा अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में भी उसे भारतीय वायुसेना के प्रयोग के लिए दिन-रात उपलब्ध कराया ।

इस प्रकार श्री मिहिर कुमार सेनगुप्ता ने साहस तथा उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

25. श्री कैलाश चन्द्र महाजन,
सब-डिवीजनल मैजिस्ट्रेट,
फाजिल्का (पंजाब) ।

3 दिसम्बर 1971 को फाजिल्का सैक्टर पर शत्रु ने आक्रमण किया तथा पूरे नगर पर बमबारी की । जनता एक दम सड़कों पर आ गई तथा नगर छोड़कर भागने लगी । फौरन श्री कैलाश चन्द्र महाजन ने निकासी योजना के के अनुसार लोगों को मलोत रोड पर सुव्यवस्थित ढंग से भेजने की व्यवस्था की । वे स्वयं नगर के चारों ओर चक्कर लगाते रहे और लोगों से शान्त रहने के लिए अनुरोध करते रहे और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किये बिना निकासी कार्य पर निगरानी रखते रहे । सबुधाना डिस्ट्री-ब्यूटरी के एक भाग पर जो फाजिल्का सैक्टर में एक प्रमुख रक्षा पंक्ति पर था, कब्जा कर लेने से शत्रु ने 3 दिसम्बर 1971 की रात्रि को एक पुल पर अपना कब्जा कर लिया । 4 दिसम्बर, 1971 को श्री महाजन ने 1.5 करोड़ रुपये की नकद धन राशि के साथ स्टेट बैंक को और सरकारी कर्मचारियों के परिवारों को वहां से निकालने की व्यवस्था की । उसी शाम को शत्रु के भारी आक्रमण की आशंका से इन्होंने शेष सब सरकारी कर्मचारियों को नगर पुलिस स्टेशन में एकत्रित किया तथा संक्रिया के प्रभारी ब्रिगेडियर से परामर्श किया । जिसने उनसे यह अनुरोध किया कि फाजिल्का में नागरिक प्रशासन बनाये रखा जाये क्योंकि उन्हें टेलिफोन, पुलिस, बिजली तथा जलपूर्ति सम्बन्धी सुविधायें बनाये रखने की आवश्यकता थी । यद्यपि तनाव बढ़ रहा था, फिर भी श्री महाजन फाजिल्का में बराबर बने रहे और सेनाओं में आत्मविश्वास बनाए रखा ।

4 दिसम्बर, 1971 को सायं 8 बजे भारतीय सेना को यह समाचार मिला कि शत्रु के टैंक बादा ग्राम तक आ पहुंचे हैं और फाजिल्का नगर को घेरने के लिए मलोत रोड पर आ गए हैं । इस संकट काल में श्री महाजन ने स्थिति को काबू में करके नगर की सभी आवश्यक सेवाओं को सुचारू रखा । उन्होंने सैनिक प्राधिकारियों को उनकी

जरूरत की चीजें उपलब्ध कराने में उनकी हर सम्भव सहायता की । सैनिक प्राधिकारियों को रेत के बोरों, अन्य रक्षा सामान तथा अग्रिम क्षेत्रों में गोलाबारूद पहुंचाने के लिये ट्रकों की बहुत अधिक आवश्यकता थी। श्री महाजन ने यह सब सामान स्वयं जुटाकर उनकी जरूरतें पूरी की ।

आद्योपान्त श्री कैलाश चन्द्र महाजन ने साहस, दृढ़ संकल्प तथा उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

26. जे० सी०, नम्बर अभी नही मिला, नायब सूबेदार शिंगाड़ा सिंह, इंजीनियरी (रेडियो आपरेटर) ।

17 दिसम्बर 1971 को वायुसेना के एक अग्रिम अड्डे पर यह सूचना मिली कि शत्रु ने भटिंडा के रेलवे स्टेशन और उसके आस-पास के गांवों पर बमबारी की है, जिससे सिविल जान-माल का भारी नुकसान हुआ है । यह भी खबर मिली कि बहुत से बम ऐसे भी हैं, जो अभी फटे नहीं हैं। नायब सूबेदार शिंगाड़ा सिंह अपने साथियों के साथ फौरन घटनास्थल पर पहुंच गये और उन्होंने उस इलाके की पूरी छान-बीन करके, सतह बिना फटे बमों का पता लगाया । यद्यपि इन्हें यह अच्छी तरह पता था कि इन बमों में देर से फटने वाले फ्यूज लगे हैं, फिर भी, अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए वे फ्यूज निकालने के काम में जुट गये । अभी वे अपने साथियों के साथ भोजन के लिए मुड़े ही थे कि एक बम फट गया और बाद में दो बम ऐसे भी पाए गये, जिनके फ्यूज के कलपुर्जे चालू हो चुके थे । इसकी परवाह न करते हुए उन्होंने 96 घंटों में ही सभी बमों के फ्यूज निकाल दिये और इस प्रकार उन्होंने स्थानीय लोगों में भी आत्म-विश्वास भर दिया ।

इस कार्रवाई में, नायब सूबेदार शिंगाड़ा सिंह ने उच्च कोटि के साहस और नेतृत्व का परिचय दिया ।

27. 235583 कार्पोरल गुरदीप सिंह देओल, ब्लैक स्मिथ और वेल्डर (1) ।

15 अप्रैल, 1971 को वायुसेना के एक अग्रिम अड्डे के विसर्जन क्षेत्र में भयंकर आग लग गई । साइरन सुन कर कार्पोरल गुरदीप सिंह देओल, जो उस समय अड्डे से काफी दूर थे, मोटर साइकिल से घटना स्थल पर सबसे पहले पहुंचे। उन्होंने देखा कि आग विस्फोट-सहबाड़े की ओर तेजी से बढ़ रही है जिससे वायुयान के लिए खतरा पैदा हो गया है अत: उन्होंने वायुयान को बाहर निकालने का फैसला किया। उन्हें एक ट्रैक्टर दिखाई दिया, लेकिन उस समय उसकी प्रज्वलन-चाभी नही मिल सकती थी; अत: उन्होंने ट्रैक्टर को अपनी सूझबूझ से ही चालू किया । अभी, कार्पोरल देओल आग के सबसे पास वाले वायुयान को ट्रैक्टर से जोड़ भी नहीं पाये थे कि विस्फोट-सह बाड़ा चारों ओर से आग की लपटों से घिर गया । अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए उन्होंने वायुयान को बाहर खींच लिया, और इस प्रकार उसको नष्ट होने से बचा लिया । उन्होंने इसी प्रकार चार और वायुयानों को विस्फोट-सह बाड़ों से बाहर निकाला । इस संक्रिया के दौरान, वे घायल भी हो गये, किन्तु उन्होंने अपनी चोटों की तब तक मरहम-पट्टी नहीं कराई, जब तक कि सभी वायुयानों को सुरक्षित स्थान पर नहीं ले गये ।

इस कार्रवाई के दौरान, कार्पोरल गुरदीप सिंह देओल ने उच्च कोटि के साहस और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया।

28. जी०/26335 डी० एम० ई० श्री भाग सिंह, सामान्य आरक्षण इंजीनियरी दल।

20 जनवरी, 1972 को प्रात: को एक डोजर जो पहाड़ी की नई सड़क सर्वेक्षण के निर्माण तल को काटते हुए बुरी तरह से कीचड़ में फंस गया था, और दोनों परिचालक तथा धंसते हुए डोजर के खोने का खतरा हो गया था, डी० एम० ई० श्री भाग सिंह ने डोजर को बाहर निकालने के लिए स्वेच्छा से अपने आप को प्रस्तुत किया । डोजर का एक हिस्सा लगभग 280 फुट गहरी खड्ड के बिल्कुल ऊपर लटक रहा था, जबकि डोजर के बीच का हिस्सा एक चट्टान पर फंसा हुआ था । अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए उन्होंने कार्य किया और मशीन को बाहर निकाल लिया ।

इस कार्य में डी० एम० ई० श्री भाग सिंह ने उच्च कोटि के साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

29. जी०/72356 पी० एन० आर० श्री राम सिंह सामान्य आरक्षण इंजीनियरी दल ।

15/16 अप्रैल, 1972 की प्रात: के 5.00 बजे, श्रीराम सिंह कमांग की खान के स्थान पर संतरी का कार्य कर रहे थे; जबकि चार मीजो विरोधियों ने उन पर अचानक हमला कर दिया । यद्यपि विरोधी सशस्त्र थे और उनकी संख्या भी अधिक थी, तथापि वे उनके विरुद्ध अकेले डंडे से ही लड़ते रहे । इस मुठभेड़ में शत्रु ने उन्हें गोली मार दी और वे नाले में धकेल दिये गये । घायल होने के बावजूद वे संकट सूचना देते रहे और पड़ोस के शिविरों से सहायता पहुंचने तक अपने प्राणों को बड़े खतरे में डालकर विरोधियों का मुकाबला करते रहे । इसके बाद आक्रमणकारी भाग खड़े हुये ।

इस कार्यवाही में श्रीराम सिंह ने उच्च कोटि के साहस और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया ।

30. जी०/31341 डी० एम० ई० श्री प्रेमचन्द, सामान्य आरक्षण इंजीनियरी दल ।

डी० एम० ई० श्री प्रेमचन्द को भारत तथा सिक्किम के बीच सड़क के एक भाग की देख रेख करने का काम सौंपा गया था । इस सड़क पर भूमि-स्खलन प्राय: होते रहते हैं और ये स्खलन बड़े खतरनाक होते हैं क्योंकि इस पर बड़ी-बड़ी चट्टानें और काफी मलवा गिरता रहता है । इन कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने सड़क को साफ रखा । 16 अगस्त 1972 को उपर्युक्त सड़क पर एक बड़ा भू-स्खलन हुआ और सारा यातायात रुक गया । अपनी जान की परवाह न करते हुए भी वे सड़क साफ करते रहे और सड़क को यातायात के लिए खोलने में सफल हो गये।

इस कार्यवाई में डी० एम० ई० श्री प्रेमचन्द ने उच्च कोटि के साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

31. जी० ओ०/443 ई० ई० (सिव) श्री सर्वदेव चौधरी सामान्य आरक्षण इंजीनियरी दल ।

31 जनवरी, 1972 को सीमा क्षेत्र में सड़क पर वरिष्ठ अधिकारियों के एक दल का संचालन करते हुए श्री सर्वदेव चौधरी का एक चट्टान-स्खलन से सामना हुआ, जिससे सड़क पूरी तरह से रुक गई थी । इसके फलस्वरूप लगभग 200 गाड़ियों का एक काफिला रुक गया । चट्टानें निरन्तर गिर रहीं थी, जिससे सड़क पर जा रही गाड़ियों और व्यक्तियों के लिए खतरा पैदा हो गया था । यह जानते हुए भी कि संचार पथ को बहाली नितान्त आवश्यक थी, उनका कर्मी दल इस खतरे का सामना करते और भू-स्खलन को साफ करने के लिए रजामंद न था । अपनी जान की परवाह न करते हुए भी, उन्होंने सड़क की रुकावट को दूर करने के लिए अपने आदमियों का स्वयं नेतृत्व किया । चट्टान के गिरने से घायल होने के बावजूद भी वे अपने कर्मचारियों को सहयोग देते रहे और चंद ही घंटों के अंदर-अंदर सड़क को साफ करने में सफल हो गये । एक और अवसर पर जब उनका सामना एक बड़े भू-स्खलन से हुआ तो उन्होंने बड़े साहस का प्रदर्शन किया और अपने साथियों का जिन्हें वहां मार्ग प्रशस्त करने वालों में से एक की घटना स्थल पर ही मृत्यु के कारण आघात पहुंचा था, हौसला बढ़ाते रहे ।

इस कार्यवाही में श्री सर्वदेव चौधरी ने उच्च कोटि के साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

32. जी० ओ०/694 ए० ई० ई० (सी०) श्री अशोक कुमार मुकर्जी, सामान्य आरक्षण इंजीनियरी दल ।

ए० ई० ई० (सी०) श्री अशोक कुमार मुखर्जी, नवम्बर 1971 में राजस्थान के पश्चिमी भाग में सड़क आरक्षण यूनिट में थे । उनके जिम्मे एक अत्यन्त सामरिक महत्व की सड़क की देखरेख का काम था । 1971 में, पाकिस्तान के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही के दौरान उक्त सड़क के भाग के रख-रखाव की बड़ी कठिन समस्या उठ खड़ी हुई क्योंकि उक्त सड़क कई चलायमान प्रकार के बालू के टीलों को पार कर रेतीले क्षेत्र में से गुजरती थी । शत्रु की लगातार बम-बारी से न घबराते हुए वे अपने आदमियों के साथ देख-रेख के विभिन्न कार्यों के लिए उक्त सड़क पर गये और कई खतरों के बावजूद उन्होंने यातायात का निर्विघ्न रूप से चलते रहना सुनिश्चित किया । युद्ध विराम के बाद, उन्हें एक और कठिन काम सौंपा गया । कुल कार्य लगभग 6 किलोमीटर लम्बाई की सड़क का था और उसे दो महीने के अन्दर पूरा किया जाना था । रात-दिन काम करते हुए और अपनी सुरक्षा और आराम का ख्याल न करते हुए, उन्होंने निर्धारित समय से पहले ही काम पूरा कर दिया ।

आद्योपान्त श्री अशोक कुमार मुखर्जी ने उच्च कोटि के साहस, दृढ़ निश्चय और नेतृत्व का परिचय दिया ।

33. जी०/107190 सुपरिटेंडेंट बी०/आर० ग्रेड श्री अलीगोहर, सामान्य आरक्षण इंजीनियरी दल ।

नवम्बर, 1971 में श्री अली गोहर, राजस्थान क्षेत्र में सड़क अनुरक्षण यूनिट में थे । वे जैसलमेर से रामगढ़ तक सड़क की देखरेख के लिए जिम्मेदार थे, जोकि सामरिक दृष्टि से बड़ी महत्वपूर्ण थी । 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध सैनिक संघर्ष के दौरान इस क्षेत्र में शत्रु की ओर से लगातार बमबारी और गोलाबारी हो रही थी । अपनी सुरक्षा और आराम की बिल्कुल परवाह न करते हुए, वे अपने आदमियों के साथ सड़क पर कार्य करते रहे और सड़कों को पूर्णतया यातायात के योग्य बनाये रखा । युद्ध विराम के बाद उन्हें हेलीकोप्टर उतरने के दो स्थानों के निर्माण का कार्य सौंपा गया । उन्होंने इस कार्य को भी आयोजित और संगठित किया तथा रात-दिन काम करते हुये निश्चित समय से पहले ही काम पूरा कर दिया ।

आद्योपान्त श्री अली गौहर ने उच्च कोटि के साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

34. जी०/22707 डी० एम० ई० श्री रमेश लाल, सामान्य आरक्षण इंजीनियरी दल ।

डी० एम० ई० श्री रमेश लाल, उस सड़क अनुरक्षण यूनिट में थे जिसे नवम्बर, 1971 में राजस्थान क्षेत्र में सामरिक महत्व की सड़कों की देखरेख के लिए युद्ध क्षेत्र में तैनात किया गया था । यद्यपि सभी तारकोली सड़क थी तथापि पटरियों की हालत बहुत खराब थी और इन सड़कों पर दोनों ओर से यातायात सम्भव नहीं था । कई स्थानों पर पटरियां भारी बालू के टीलों से 4 से 6 फुट तक की ऊंचाई तक ढकी हुई थीं । डी० एम० ई० श्री रमेश लाल को, 3 दिसम्बर और 17 दिसम्बर, 1971 के बीच शत्रु के आक्रमण के समय दो सड़कों पर बालू के टीलों के हटाने का काम सौंपा गया था । दुश्मन की बमबारी की बिल्कुल परवाह न करते हुए और रात-दिन काम करते हुए उन्होंने 4 दिनों के अंदर ही सभी बालू टीलों को दूर करके सड़कों को दोनों ओर के यातायात के योग्य बना दिया ।

इस कार्यवाही में, डी० एम० ई० श्री रमेश लाल, ने उच्च कोटि के साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

35. जी०/85095 ई० ई० एम० श्री प्रेम सिंह, सामान्य आरक्षण इंजीनियरी दल ।

ई० ई० एम० श्री प्रेम सिंह उस सड़क अनुरक्षण यूनिट में थे जिसे नवम्बर, 1971 में राजस्थान क्षेत्र में सामरिक महत्व की सड़कों की देख रेख के लिए युद्ध क्षेत्र में तैनात किया गया था । यद्यपि सभी सड़कें तारकोली थीं तथापि पटरियों की हालत बहुत खराब थी और इन सड़कों पर दोतरफा यातायात सम्भव नहीं था । कई स्थानों पर पटरी 6 से 8 फुट तक की ऊंचाई के भारी बालू के टीलों से ढकी हुई थीं । ई० ई० एम० श्री प्रेमसिंह को, 3 दिसम्बर और 17 दिसम्बर 1971 के बीच शत्रु के आक्रमण के समय दो सड़कों पर बालू के टीलों के हटाने का काम सौंपा गया था । दुश्मन की

बमबारी की बिल्कुल परवाह न करते हुए और रात-दिन काम करते हुए उन्होंने 3 दिनों के अंदर ही सभी बालू के टीलों को दूर करके सड़कों को दोनों ओर के यातायात के योग्य बना दिया ।

इस कार्यवाही में , ई० ई० एम० श्री प्रेम सिंह ने उच्च कोटि की वीरता एवं कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

36. जी०/104932 चपरासी वय्यानाथू कोशी टामस, सामान्य रिजर्व इंजीनियरी दल ।

21 अगस्त 1972 की रात को राइफलों, पिस्तोलों और डाहों से सशस्त्र चार विरोधी नागाओं ने नकदी और टाइप-राइटरों के चुराने के उद्देश्य से चजुवा में 19 आर०एम०यू० के कार्यालयों पर आक्रमण किया । 19 आर० एम० यू० के कार्यालय के कमरे में जब ये विरोधी घुसे, उस समय चपरासी वय्यानाथू कोशी टामस सो रहे थे । शोर सुनने पर वे जाग पड़े और उन्होंने देखा कि विरोधी मेट से उस अलमारी की चाबियां मांग रहे थे जहां नकदी और टाइपराईटर रखे थे । जब उन्होंने कुछ पूछना चाहा तो विरोधियों ने उन्हें पकड़ लिया और धमकी दी कि यदि शोर मचाया और चाबियां उनके हवाले न कीं तो वे उनकी हत्या कर देंगे । यद्यपि वे जानते थे कि चाबियां कहां रखी हैं तो भी उन्होंने कुछ नहीं बताया । वे दो विरोधियों को कार्यालय से बाहर निकालने तथा बच निकलने और चीख पुकार करने में सफल हो गये परन्तु विरोधियों ने उनपर तीन गोलियां चलाईं परन्तु वे अपनी होशियारी से बच निकले और संकट की सूचना दे दी तथा इस प्रकार वे न केवल अपने प्राणों की ही रक्षा कर सके बल्कि उन्होंने सरकारी सम्पत्ति को भी बचा लिया ।

इस कार्यवाही में चपरासी वय्यानाथू कोशी टामस ने उच्च कोटि की वीरता, सूझ-बूझ और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

37. 245354 कार्पोरल जय राज विन्द, एयर फील्ड सैफ्टी आपरेटर ।

4 दिसम्बर, 1971 को हथियारों से लदा एक वायुयान वायुसेना के एक अग्रिम अड्डे पर उतरते समय दुर्घटनाग्रस्त हो गया । वायुयान का नोक-पहिया टूट गया था और वायु-यान में आग लग गई थी । वायुयान पर लदे मिसाइलों तथा तथा अन्य हथियारों के फट जाने की आशंका के बावजूद, कार्पोरल जय राज विन्द ने आग बुझाने का जोखिम भरा काम करने का फैसला किया । उन्होंने अपने जीवन की चिन्ता किये बिना, जलते हुए वायुयान के बहुत समीप रहकर भी, सारा कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया । अपने दृढ़ संकल्प के कारण, वे आग बुझाने में सफल हो ही गये, इस प्रकार उन्होंने न केवल पायलट की जान बचाई बल्कि वायुयान को भी पूरी तरह ध्वस्त होने से बचा लिया ।

कार्पोरल जय राज विन्द ने जो उत्कृष्ट साहस और सूझ-बूझ दिखाई और जिस प्रकार अपने जीवन की भी चिन्ता न करके कार्य पूरा किया, वह भारतीय वायुसेना के वीरता की उच्च परम्पराओं के अनुकूल है ।

38. 2659927 ग्रेनेडियर रण सिंह, ग्रेनेडियर्स ।

ग्रेनेडियर रण सिंह एक गश्ती दल में थे जिसे 15 मार्च, 1972 से 20 मार्च, 1972 तक उत्तर-पूर्वी सीमा पर एक बर्फीले भूभाग में गश्त लगाने का काम सौंपा गया था । 18 मार्च, 1972 को 8 सदस्यों का यह दल बर्फीले तूफान में फंस गया और ऊपर जजीला की ढलान पर अचानक हिम-स्खलन से ये सारे ही बर्फ के नीचे दब गये । ग्रेनेडियर रणसिंह ने, जो बर्फ में पूर्णतः नहीं दब पाये थे, दल के अन्य सदस्यों को बर्फ से बाहर निकालने के लिए अपने नंगे हाथों से बर्फ खोदना आरम्भ कर दिया । एक और ग्रेनेडियर को बर्फ से निकालकर उसे चेतनावस्था में लाकर इन्होंने उसे, और साथियों को बर्फ से निकालने के लिए प्रोत्साहित किया । ग्रेनेडियर रण सिंह अपने नंगे हाथों से बर्फ खोदते रहे और ऐसा करते हुये वे अपना बर्फ का चश्मा और टोप खो बैठे और उनकी बांह में भी बहुत बड़ा जख्म हो गया था, लेकिन फिर भी वे बड़ी निर्भीकता से अपने काम पर जुटे रहे और एक-एक करके दल के सभी सदस्यों को बर्फ से बाहर निकाल लाये । अन्त में एक व्यक्ति रह गया था जो दम घुटने के कारण मर चुका था ।

इस कार्यवाही में ग्रेनेडियर रण सिंह ने उच्च कोटि के साहस तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

39. सिविलियन ड्राइवर श्री नन्द कुमार झा, (**मरणोपरांत**)

श्री नन्द कुमार झा 4 दिसम्बर, 1971 को पूर्वी क्षेत्र में एक आर्मी यूनिट के साथ ड्यूटी करते हुए एक सिविलियन ट्रक चला रहे थे । जिस सड़क पर ट्रकों का काफिला आगे बढ़ रहा था, उस पर बहुत सुरंगें बिछी हुई थीं । शत्रु द्वारा दूर तक बिछाई गई इन सुरंगों के कारण केवल सड़क के पक्के भाग से ही सुरंगें साफ की जा सकीं । जब और सिविलियन ड्राइवरों ने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया तो श्री झा काफिले के अग्रभाग में गए और ड्राइवरों को आगे बढ़ने के लिए राजी किया । चूंकि उनकी गाड़ियों में रक्षा सामग्री थी इसलिए श्री झा ने अपनी गाड़ी सबसे आगे की । कुछ आगे चलकर एक गाड़ी के खराब हो जाने से सारा काफिला रुक गया । आगे बढ़ने के लिए एक ही रास्ता था और वह यह था कि सड़क छोड़कर खराब हुई गाड़ी का चक्कर काट कर आगे बढ़ा जाये । श्री झा यह जानते थे कि सड़क के किनारे सुरंगें साफ नहीं हुई हैं और उनकी गाड़ी का सुरंगों से उड़ जाने का काफी खतरा था क्योंकि उनकी गाड़ी में अति आवश्यक रक्षा सामग्री थी इसलिए वे गाड़ी को सड़क के एक ओर से ले जाने के लिए सबसे पहले तैयार हो गय । जैसे ही इन्होंने गाड़ी को उस ओर मोड़ने का प्रयास किया, इनकी गाड़ी सुरंग से जा लगी और उड़ गई और वहीं पर इनकी मृत्यु हो गई ।

इस प्रकार श्री नन्द कुमार झा ने उच्च कोटि के साहस, दृढ़-निश्चय तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

अशोक मित्र,
राष्ट्रपति के सचिव ।

लोक सभा सचिवालय

नई दिल्ली-1, दिनांक 14 मई 1973

सं० 1 (2)-पी० यू०/73 लोक सभा तथा राज्य सभा के निम्नलिखित सदस्य सरकारी उपक्रमों सम्बन्धी समिति के सदस्यों के रूप में 30 अप्रैल, 1974 को समाप्त होने वाले कार्यकाल के लिए विधिवत निर्वाचित घोषित किये गये :—

लोक सभा के सदस्य

1. श्री दिनेश भट्टाचार्य
2. श्री टी० एन० गाबित
3. श्री के० गोपाल
4. श्री जे० माया गौडर
5. श्रीमती सुभद्रा जोशी
6. डा० महिपतराय मेहता
7. डा० संकटा प्रसाद
8. श्री नवल किशोर शर्मा
9. श्री रामावतार शास्त्री
10. श्री आर० पी० यादव

राज्य सभा के सदस्य

1. श्री एम० एस० अब्दुल कादर
2. श्री लाल के० आडवानी
3. श्री यू० एन० महीदा
4. श्रीमती पूर्बी मुखोपाध्याय
5. श्री सूरज प्रकाश

अध्यक्ष ने श्रीमती सुभद्रा जोशी को समिति का सभापति नियुक्त किया है।

एम० ए० सौन्दरराजन
उप सचिव।

विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्रालय

(विधि कार्य विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 14 मई 1973

सं० ए० 11019 (3)/73 प्रशा० III (वि०का०) : आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 255 की उपधारा (3) के अनुसरण में और भारत सरकार के विधि और न्याय मंत्रालय (विधि कार्य विभाग) की अधिसूचना सं० ए० 11019 (3)/72–प्रशा० III (वि० का०) तारीख 31 जनवरी, 1973 के क्रम में, केन्द्रीय सरकार, आयकर अपील अधिकरण के निम्नलिखित प्रत्येक सदस्य को उक्त उप-धारा के प्रयोजनार्थ एतद्द्वारा प्राधिकृत करती है, अर्थात् :—

सर्वश्री :

1. एम० के० श्रीनिवास आयंगर, न्यायिक सदस्य ।
2. ई० एम० नारायण उन्नी, लेखा-सदस्य।
3. के० रंगनाथचारी, न्यायिक सदस्य।
4. वाई० उपाध्याय लेखा-सदस्य।
5. पी० वी० बालकृष्ण राव न्यायिक सदस्य।
6. बिशन लाल, लेखा सदस्य।
7. सुख देव बहल, न्यायिक सदस्य।
8. आर० आर० रस्तोगी, न्यायिक सदस्य ।
9. मूलराज सिक्का, न्यायिक सदस्य ।
10. आर० एल० सेगल, न्यायिक सदस्य
11. ए० कृष्णमूर्ति न्यायिक सदस्य।
12. जार्ज चेरीयन, लेखा सदस्य।

पी० वी० वेंकटसुब्रह्मण्यम्
संयुक्त सचिव और विधि सलाहकार

वाणिज्य मंत्रालय

(कांडला निर्बाध व्यापार क्षेत्र स्टियरिंग बोर्ड)

नई दिल्ली, दिनांक 24 मई 1973

संकल्प

सं० 3/2/73–एफ० टी० जेड० (टी०) कांडला निर्बाध व्यापार क्षेत्र स्टियरिंग बोर्ड नाम से एक उच्चस्तरीय स्टियरिंग बोर्ड का गठन किया है, जिसके निम्नलिखित सदस्य होंगे :—

1. वाणिज्य उपमंत्री	अध्यक्ष
2. विशेष सचिव/अपर सचिव वणिज्य मंत्रालय नई दिल्ली।	सदस्य
3. सचिव, उद्योग, खान तथा विद्युत, गुजरात सरकार, गांधीनगर।	,,
4. संयुक्त सचिव, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग, नई दिल्ली	,,
5. सदस्य (सीमा शुल्क), उत्पादन-शुल्क तथा सीमा शुल्क का केन्द्रीय बोर्ड, वित्त मंत्रालय, राजस्व तथा बीमा विभाग, नई दिल्ली।	,,
6. वित्तीय सलाहकार (वाणिज्य), वित्त मंत्रालय, व्यय विभाग, नई दिल्ली ।	,,
7. संयुक्त सचिव, औद्योगिक विकास मंत्रालय, नई दिल्ली	,,
8. अध्यक्ष, कांडला पत्तन ट्रस्ट गांधीधाम।	,,
9. प्रतिनिधि, योजना आयोग नई दिल्ली।	,,
10. संयुक्त सचिव/निदेशक इंचार्ज, कांडला निर्बाध व्यापार क्षेत्र प्रकोष्ठ, वाणिज्य मंत्रालय, नई दिल्ली।	सदस्य-सचिव

2. बोर्ड के विचारार्थ विषय निम्नोक्त हैं :—

(1) कांडला निर्बाध व्यापार क्षेत्र के कार्यकरण का समय-समय पर पुनर्विलोकन करना तथा ऐसे निदेश देना जोकि उस क्षेत्र में पहले से स्थापित उद्योगों के उचित कार्यकरण के लिये तथा इस क्षेत्र के ठीक ढंग से विकास के लिए वह ठीक समझे ;

(2) स्थानीय दशाओं तथा विश्व के अन्य भागों में निर्बाध व्यापार क्षेत्रों में, जहां सफलता प्राप्त हुई है, उद्यमियों के लिए उपलब्ध रियायतों को ध्यान में रखते हुए, कर संबन्धी तथा अन्य ऐसी अतिरिक्त रियायतों के बारे में विनिश्चय करना जोकि ठीक प्रकार के उद्यमियों को आकर्षित करने तथा क्षेत्र में औद्योगीकरण की गति को तेज करने के लिए आवश्यक हों; और

(3) कांडला निर्बाध व्यापार क्षेत्र से संबंधित ऐसे नीति संबंधी मामलों पर कार्यवाही करना जिन पर उच्च स्तर पर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता हो तथा जो कांडला निर्बाध व्यापार क्षेत्र समिति द्वारा उसे भेजे जाएं।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाये और उसकी एक-एक प्रति सभी सम्बद्धों को भेजी जाये।

टी० के० सारंगन
निदेशक

(सामुदायिक विकास विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 26 मई 1973

संशोधन

सं० 29/3/69-टी० आर० जी०-आर० एम० पी०—विकास केन्द्रों में प्रायोगिक अनुसंधान परियोजना के लिए केन्द्रीय निदेशन समिति के गठन के बारे में इस मंत्रालय के 23 जुलाई, 1971 के संकल्प संख्या 29/3/69-टी० आर० जी०-आर० एम० पी० में निम्नलिखित किये जाते हैं :—

(क) मद (3) में—

(1) क्रम संख्या 15 के स्थान पर निम्न पढ़ें :

"15. डीन, राष्ट्रीय सामुदायिक विकास संस्थान, हैदराबाद।

(2) क्रम संख्या 18 के बाद निम्न क्रम संख्या को जोड़िये :

"19. श्री पंपन गौडे, सदस्य, लोक सभा।"

"20. श्री आर० एन० हल्दीपुर, संयुक्त सचिव, कार्मिक विभाग,
मन्त्रिमण्डल सचिवालय, नई दिल्ली।"

(ख) मद संख्या (4) के लिए श्री एम० एन० चौधरी के स्थान पर श्री जे० एस० सरौहिया का नाम रखें।

आदेश

आदेश है कि इस संकल्प की प्रतिलिपि सभी सम्बन्धितों को भेजी जाये।

यह भी आदेश है कि यह संकल्प आम सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित की जाये

एन० ए० आगा
संयुक्त सचिव,

समाज कल्याण विभाग

नई दिल्ली, दिनांक 26 मई 1973

संकल्प

सं० एफ० 7-1/73-आर० पी० यू०—दिनांक 4 जुलाई, 1970 की सरकारी अधिसूचना संख्या एफ० 25/1/70-एस० डब्ल्यू-5 के अधिक्रमण में समाज कल्याण अनुसंधान सम्बंधी सलाहकार समिति को इन विषयों पर समाज कल्याण विभाग को सलाह देने के लिए पुर्नगठित किया जाता है :—

(1) समाज कल्याण, सामाजिक नीति और सामाजिक विकास में अनुसंधान की उन्नति, समन्वय और उपयोग।

(2) अनुसंधान और अध्ययन क्षेत्रों की पहचान तथा प्राथमिकताओं का संकेत।

(3) रीति-वैधनिक समागता तथा समाज कल्याण विभाग को वित्तीय सहायता हेतु दिए जाने वाले अध्ययन तथा अनुसंधान सम्बंधी सुझावों के महत्व एवं सुझावों की लागत।

(4) समाज कल्याण में अनुसंधान की उन्नति सम्बंधी अन्य कोई मामला।

2. समिति में निम्नलिखित सदस्य होंगे :—

(1). श्री पी० एन० लूथरा, अध्यक्ष (पदेन)
अतिरिक्त सचिव,
समाज कल्याण विभाग,
नई दिल्ली।

(2). श्रीमती प्र० प० त्रिवेदी,
संयुक्त सचिव,
समाज कल्याण विभाग,
नई दिल्ली। सदस्य (पदेन)

(3) प्रा० एस० सी० दुबे,
निदेशक,
उच्च-अध्ययन का भारतीय संस्थान,
शिमला। सदस्य

(4) प्रा० एस० दास गुप्ता,
निदेशक,
अध्ययन का गांधी-वादी संस्थान,
वाराणसी। सदस्य

(5) श्री एस० एन० राणाडे,
प्रधानाचार्य,
सामाजिक कार्य का दिल्ली स्कूल,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली। सदस्य

(6) श्री पी० रामचन्द्रन,
अध्यक्ष, अनुसंधान विभाग, सदस्य
सामाजिक विज्ञानों का टाटा संस्थान,
बम्बई।

(7) श्री वी० जगन्नाथम, सदस्य
सामाजिक नीति और प्रशासन के प्रचार्य
जन-प्रशासन का भारतीय संस्थान,
दिल्ली।

(8) श्री पी० आई० वैद्यानाथन सदस्य
निदेशक, (पदेन)
जन सहकारिता में अनुसंधान और
प्रशिक्षण का केन्द्रीय संस्थान, नई दिल्ली।

(9) डा० के० जी० कृष्णामूर्ति सदस्य
संयुक्त निदेशक (समाज कल्याण)
योजना आयोग, नई दिल्ली।

(10) श्री जे० पी० नायक,
सदस्य-सचिव, सदस्य
(पदेन)

सामाजिक विज्ञान संस्थान की
भारतीय परिषद, नई दिल्ली।

(11) श्री के० एन० जार्ज, सदस्य
(पदेन)

अध्यक्ष,
सामाजिक कार्य स्कूल संस्था
द्वारा सामाजिक कार्य का मद्रास स्कूल,
मद्रास।

(12) डा० ए० बी० बोस, सदस्य-
सचिव
(पदेन)

सलाहकार,
समाज कल्याण विभाग,
नई दिल्ली।

3. समिति के सदस्यों की अवधि तीन वर्ष होगी। सरकार इस अवधि को बढ़ा सकती है।

4. समिति को यह अधिकार होगा कि वह अतिरिक्त सदस्यों को सहयोजित करे तथा विख्यात अनुसंधान कार्यकर्त्ताओं को जब भी आवश्यक हो बैठकों के लिए आमन्त्रित करे।

5. समिति के सदस्यों के लिए कोई विशेष तरवाह नहीं होगी। तो भी सरकारी सदस्यों को इस सम्बन्ध को इस सम्बन्ध में उनकी यात्राओं के लिए उनके अपने अपने विभागों के नियमों के अनुसार यात्रा/दैनिक भत्ता मिलेगा। गैर सरकारी सदस्यों को इन बैठकों में आने के लिए जो यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता मिलेगा वह उतना ही होगा जो भारत सरकार के प्रथम-ग्रेड अधिकारियों को मिलता है।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाय।

प्र० प० त्रिवेदी
संयुक्त सचिव।

संस्कृति विभाग

नई दिल्ली, दिनांक मई, 1973

सं० एफ० 22-2/72 सी० ए०/(2)—संस्कृति विभाग की अधिसूचना सं० एफ० 22-2/72 सी० ए०/(2) दिनांक 27 नवम्बर, 1972 को आंशिक रूप से संशोधन करते हुए रवि शंकर विश्वविद्यालय रायपुर के प्रतिनिधि के रूप में भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख आयोग के वर्तमान सदस्य प्रो० ओ० पी० भटनागर, अवैतनिक सचिव, पब्लिक लाइब्रेरी इलाहाबाद को भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख आयोग के विधान की धारा 3.1(2) के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार के नाम-जद-व्यक्ति के रूप में तत्काल भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख आयोग के सदस्य के रूप में नियुक्त किया जाता है।

उनकी नियुक्ति की कार्यावधि 25 सितम्बर, 1977 तक होगी।

ए० एस० तलवार,
अवर सचिव

निर्माण और आवास मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 31 मई 1973

संकल्प

विषय:—दिल्ली महानगर क्षेत्र तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लिये विकास प्लानों के बनाने तथा कार्यान्वयन के लिये उच्च सत्ता प्राप्त बोर्ड का पुनर्गठन।

सं० 8-6 (1)/69-यू० डी० 11—दिल्ली महानगर क्षेत्र तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लिये विकास प्लानों के बनाने तथा कार्यान्वयन हेतु एक उच्च सत्ता प्राप्त बोर्ड स्वास्थ्य मंत्रालय के दिनांक 31 जुलाई, 1961 के संकल्प सं० एफ० 10-79160/एल० एस० जी० द्वारा गठित किया गया था। उच्च सत्ता प्राप्त बोर्ड के गठन में आखिरी परिवर्तन स्वास्थ्य, परिवार नियोजन तथा-विकास मंत्रालय (स्वास्थ्य तथा नगर-विकास विभाग) के दिनांक 9 अक्टूबर, 1968 के संकल्प सं० 21001 (4)/68-यू० डी० द्वारा किया था।

2. उच्च सत्ता प्राप्त बोर्ड को और अधिक व्यावहारिक बनाने हेतु, भारत सरकार ने इसके पुनर्गठन का निर्णय किया है। पुनर्गठित बोर्ड का गठन इस प्रकार से होगा :—

1. केन्द्रीय मंत्रिमण्डल के निर्माण और आवास- मंत्री अध्यक्ष
2. केन्द्रीय निर्माण और आवास मंत्रालय के राज्य मंत्री सदस्य
3. केन्द्रीय गृह मंत्रालय के राज्य मंत्री ,,
4. केन्द्रीय सिंचाई तथा बिजली मंत्रालय के राज्य मंत्री ,,
5. केन्द्रीय योजना राज्य मंत्री ,,
6. केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के राज्य मंत्री ,,
7. मुख्य मंत्री, उत्तर प्रदेश ,,
8. मुख्य मंत्री, हरियाणा ,,

9.	मुख्य मंत्री, राजस्थान	सदस्य
10.	उप राज्यपाल, दिल्ली	,,
11.	महापौर, दिल्ली	,,
12.	मुख्य कार्यकारी पार्षद, दिल्ली महानगर परिषद	,,
13.	संयुक्त सचिव (आवास) निर्माण और आवास मंत्रालय	सदस्य-सचिव

3. बोर्ड के विचारणीय विषयों में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की प्रति सभी संबंधित व्यक्तियों को भेजी जाये।

आदेश दिया जाता है कि संकल्प को सामान्य सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाये।

पी० प्रभाकर राव
संयुक्त सचिव,

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1973

No. 36-Pres./73.—The President is pleased to approve the award of the KIRTI CHAKRA for acts of conspicuous gallantry to :—

1. Shri PATI RAM, Village Pal-ka-pura, District Morena, Madhya Pradesh.

On the 28th August, 1971, information was received that the gang of dacoit Motiya Kori was likely to commit a kidnapping in village Jonha in Madhya Pradesh. A plan was devised under which a Police party was to block the ravines side of the village. A small group, consisting of six villagers and a few police men was sent to the village. They went to the village in the disguise of villagers and awaited the arrival of the dacoits in the village. When the gang reached the outskirts of the village at about 1900 hours, the group went to meet the dacoits. After some time when the dacoits started sensing some danger and were about to go back, the group pounced upon them. There was hand-to-hand fight. While the members of group were trying to apprehend the dacoits, the gang leader Motiya Kori took up his position and was about to start firing with his sten-gun, Shri Pati Ram, who saw the dacoit, pounced upon him in utter disregard to his personal safety. A scuffle ensued in which the dacoit leader was shot dead. One more dacoit was also shot dead during the encounter.

In this action, Shri Pati Ram displayed gallantry and determination of a very high order.

2. Shri HAZARI, Village Chandrapura, District Morena, Madhya Pradesh.

On the night of 18th/19th April, 1970, a gang of dacoits, armed with M.L. guns, raided village Chandrapura in Madhya Pradesh. The dacoits took the villagers by surprise and collected the able bodies men in the small village in one place. One of the dacoits with the loaded M.L. gun stood on guard and the rest of the dacoits started looting the houses of the villagers and forcibly removed the ornaments from the person of the ladies. Unmindful of his own safety, Shri Hazari pounced upon the dacoit, who was standing on guard and grappled with him. The dacoit fired at him with his gun, but he managed to deflect the gun and snatched it from him. Encouraged by gallant action of Shri Hazari, other villagers also mustered courage and removed wooden bars from the bullock-carts, standing around, and started hitting the dacoits. The dacoits started firing indiscriminately, but the villagers succeeded in inflicting major injuries on two of the dacoits who subsequently died in hospital. This unnerved the dacoits and they took to their heels, leaving behind 2 M.L. guns and the property they had looted.

In this action, Shri Hazari displayed gallantry of a very high order.

3. 7995053 Naik MOHAMMAD DAR, Pioneer Corps.

On the 15th November, 1971, Naik Mohammad Dar was travelling in a train from Siliguri to Lucknow. Soon after the train left Siliguri station, he noticed a co-passenger sitting in a suspicious posture with his hand concealed at the back. This caused suspicion in the mind of Naik Mohammad Dar who immediately caught hold of the suspect from the rear and found that the suspect was holding a hand grenade in his hand. At grave risk to his life, he grappled with the suspect, overpowered and disarmed him with the help of other passengers. He was found to be in possession of another hand grenade which was carefully concealed along with his other belongings. Naik Dar kept the suspect under full control till the train reached Kishanganj railway station where he handed him over to the Police authorities. It was due to the keen presence of mind and bold action on the part of Naik Mohammad Dar that danger to the lives of other passengers, including military personnel, in the railway compartment was averted.

In this action, Naik Mohammad Dar displayed gallantry of a high order.

4. Shri SHRIKRISHNA KIRAR
5. Shri PRITAM KIRAR

(*Posthumous*)
Village Sahasram,
District Morena,
Madhya Pradesh.

Sarvashri Shrikrishna Kirar and Pritam Kirar volunteered to scout the gang of dacoit Nathu Singh and inform the Police about its location. The gang comprised desperate criminals, armed with modern weapons and was known for merciless killing. They tracked the gang into the jungles and on the night of 18th/19th February, 1970, gave pin-point information to the Police about the location of the gang. They accompanied the Police party along with their licensed arms. An encounter with the gang ensued on the morning of 19th February, 1970. During the encounter, they moved forward, in utter disregard to their personal safety, and continued supplying vital information regarding the movements of the dacoits to the Police. They accompanied the Police searching the fields and nullas and located the dacoits who had hidden themselves with a view to escape. In the encounter, 9 dacoits, including the leader Chhota Nathu were killed and one semi-automatic self-loading rifle, one sten-gun five .303 rifles etc. were recovered. One dacoit was captured alive. Late on, Shri Shrikrishna Kirar was killed by some anti-social elements.

Sarvashri Shrikrishna Kirar and Pritam Kirar displayed gallantry and determination of a very high order.

No. 37-Pres./73.—The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Wing Commander (Now Group Captain MAN MOHAN SINGH (4023), Flying (Pilot).

Wing Commander (now Group Captain) Man Mohan Singh was commissioned in the Indian Air Force in January, 1951. During the India-Pakistan conflict of December, 1971, he was in command of an Operational Fighter Squadron in the Eastern Sector. His squadron flew a total of 110 sorties in Bangladesh in close support and anti-shipping roles and met all its operational commitments without damage to any of its aircraft. He personally led 19 sorties and successfully engaged enemy defence positions, gun boats and ships despite heavy ground fire. When the heliborne operations across the Maghana river commenced, his squadron provided very effective aircover for the successful completion of the task. In addition, the squadron provided valuable close support to the Army in the Agartala Sector inspite of the fact that the aircraft had to operate from a short runway at Agartala.

Throughout the operations, he displayed exemplary courage and devotion to duty of a high order.

2. Squadron Leader (now Wg. Cdr.) DHIRENDRA SINGH JAPA, VM (4819) Flying (Pilot).

During the operations against Pakistan in December 1971, Squadron Leader Dhirendra Singh Jafa served with a Fighter Bomber Squadron in the Western Sector. On 4th December, 1971, when the enemy had encircled a Battalion of our troops in a small enclave in the Hussainiwala area and was pressing hard with tanks, he led a two aircraft formation in this area. He carried out over 12 attacks and personally destroyed or damaged seven enemy tanks and a jeep. This action blunted the enemy assault and enabled our encircled troops to extricate themselves with minimum casualties. On 5th December, 1971, he was detailed as the Sub-Section Leader of a four aircraft strike mission over the enemy gun positions which were constantly shelling our positions in an area in the west of Amritsar. Despite the heavy ground fire from the enemy guns, he carried out successful attacks until in his sixth attack his aircraft was hit by ground fire and he had to eject at a very low altitude.

In this action, Squadron Leader Dhirendra Singh Jafa displayed gallantry and leadership of a high order.

3. Major DIPAK KUMAR GANGULY (IC-18120), The Mahar Regiment (Borders). (*Posthumous*)

Major Dipak Kumar Ganguly was ordered to reinforce a defended locality in the Lipa Valley and the led his men in broad daylight inspite of heavy enemy shelling. The enemy launched two severe attacks but they were repulsed inflicting heavy casualities on the enemy. He inspired his men to fight relentlessly although his company strength was depleted. He went around the defences with complete disregard for his own safety despite the heavy enemy shelling. When the enemy launched an attack in strength and his company was forced to fall back on own post, and one of the MMG numbers was injured, he himself took the MMG enabling all his men to fall back. Although he was injured, he continued to fire till all men had withdrawn. He was the last man on the post and was mortally hit while still firing the MMG.

In this action, Major Dipak Kumar Ganguly displayed gallantry and leadership of a high order.

4. Captain HAMIR SINGH (IC-13935), Grenadiers.

On the night of 13th/14th December, 1971, Captain Hamir Singh was commanding a company of Grenadiers during the attack on Daruchhian in the Western Sector. His Company was given the task of capturing West Sour of the objective. He moved his Company deep into the enemy territory and attacked the objective. The enemy was taken by surprise and the objective fell. He moved forward with his men to take some more positions of the objective, but he came under heavy automatic fire from enemy bunkers and pill boxes. Undeterred, he pressed on and captured some more positions of the objective. When his men could not move further he, quickly ordered them to prepare themselves for the inevitable counter attacks of the enemy during the day. The enemy reacted faster than expected and launched a series of counter attacks, but he successfully repulsed the counter attacks. Despite severe bullet injuries in his arm and chest, he remained calm and displayed cool courage under adverse circumstances and under heavy automatic and artillery fire. When his strength was diminishing rapidly, an air strike was arranged to silence the most dangerously sited pill box. When the pill box was struck by the aircraft, he quickly charged the enemy bunker with his Company Headquarter personnel and artillery forward observation officers party. By his personal courage and tenacity, he infused in his men the determination to hold on to the objective in spite of depleted strength and under heavy enemy fire.

In this action, Captain Hamir Singh displayed gallantry and determination of a high order.

5. Flight Lieutenant APRAMJEET SINGH (7403), Flying (Pilot).

Flight Lieutenant Apramjeet Singh was commissioned in the Indian Air Force in June, 1963. During the India-Pakistan conflict of December, 1971, he flew 21 operational sorties consisting of escort and sweep missions, deep inside enemy territory. On 8th December, 1971, while flying as No 2 in the Chhamb Sector, his formation encountered heavy enemy ground fire in which his leader was shot down. His aircraft was also hit and sustained heavy damage. Despite the fact that the aircraft had become almost uncontrollable, due to damage to its port wing, and many other system becoming unserviceable, he displayed exemplary skill and courage in bringing his aircraft back to base, safely.

In this action, Flight Lieutenant Apramjeet Singh displayed gallantry and professional skill of a high order.

6. Flight Lieutenant MELVINDER SINGH GREWAL (7728), Flying (Pilot).

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Melvinder Singh Grewal served with a Fighter Bomber Squadron in the Western Sector. On 4th December, 1971, he was detailed as a member of a four aircraft strike mission over the enemy airfield 'Shorkot Road'. He successfully carried out the mission destroying one aircraft on ground and damaging a building. The same day, in the evening, he carried out another strike mission. As a member of a formation over the same airfield, he pressed the attack despite heavy Anti-Aircraft fire. However, in this attack his aircraft was hit by ground fire and crashed.

Flight Lieutenant Melvinder Singh Grewal displayed gallantry and devotion to duty of a high order.

7. Flight Lieutenant ADITYA VIKRAM PETHIA (8384), Flying (Pilot).

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flight Lieutenant Aditya Vikram Pethia served with a Fighter Bomber Squadron in the Western Sector. On 5th December, 1971, he was detailed as a leader of tactical reconnaissance mission over Christian Mandi to seek and destroy enemy armour vehicles. He spotted a train moving towards Bhaval Nagar transporting about 15 tanks. Despite heavy enemy ground fire, he made two attacks on the train and destroyed two enemy trains. Unmindful of his personal safety, he made another attack to silence the enemy anti-aircraft gun. However, in this attack his aircraft was hit by enemy ground fire and crashed.

Flight Lieutenant Aditya Vikram Pethia displayed gallantry and devotion to duty of a high order.

8. 1616 Assistant Commandant NAFE SINGH DALAL, Border Security Force. (*Posthumous*)

Assistant Commandant Nafe Singh Dalal was commanding a company of Border Security Force in an area in the Western Sector. When the enemy started building up the defences in that area, he was ordered to lead a patrol of platoon strength with the task of preventing any instrusion by the enemy into our territory. As the leading Sector of the patrol were approximately 50 yards away from the enemy position, it came under heavy automatic and small arms fire. Shri Dalal took Light Machine Gun himself and moved forward and engaged the enemy Medium Machine Gun which was directly firing on the Patrol. He silenced the enemy Medium Machine Gun, but was hit by an enemy MMG burst fired from the other direction. He was seriously injured and bleeding profusely but undaunted he kept the enemy engaged with his Light Machine Gun fire till his men withdrew to an alternative position. He, however, succumbed to his injuries.

In this action, Assistant Commandant Nafe Singh Dalal displayed gallantry and leadership of a high order.

9. Flying Officer KARIYADIL CHERIYAN KURUVILLA (10862), Flying (Pilot).

During the operations against Pakistan in December, 1971, Flying Officer Kariyadil Cheriyan Kuruvilla served with a fighter Bomber Squadron in the Western Sector. On 4th December, 1971, he carried out a strike mission over Chander airfield and successfully attacked enemy aircraft on ground and airfield installations. On the 5th December, 1971, he flew another strike mission over Chistian Mandi and inflicted heavy damages to a train and hit its engine despite the intensive enemy anti-aircraft fire. Again on the 6th December, 1971, he undertook a strike mission over Dera Baba Nanak area and attacked enemy tank concentrations. However, while making a second pass over the target, his aircraft was hit by the enemy anti-aircraft fire and crashed.

Throughout, Flying Officer Kariyadil Cheriyan Kuruvilla displayed gallantry and devotion to duty of a high order.

10. 3340727 Naib Subedar GIAN SINGH, The Sikh Regiment. (*Posthumous*)

Naib Subedar Gian Singh was detailed on a reconnaissance patrol in the Amritsar Sector along the cease fire line. When the patrol was approximately 50 yards from the cease fire line, the enemy opened up with heavy automatic and small

arms fire. In utter disregard to his personal safety, he rushed forward and started returning the fire from behind the cover of a raised bund. He kept changing his position stealthily and continued to engage the enemy with great determination, grit and presence of mind in spite of being surrounded from three sides by the enemy. He drew maximum enemy fire on himself which enabled the rest of the patrol to take cover and deal with the situation. In this gallant act, he was hit by an enemy MMG brust, but he continued to engage the enemy till the last and later succumbed to his injuries.

In this action, Naib Subedar Gian Singh displayed gallantry, determination and leadership of a high order.

11. 3144100 Havildar AMAR SINGH, Jat Regiment.

Havildar Amar Singh was ordered to take a patrol to intercept an enemy patrol which had intruded into our territory in the vicinity of Forward Defended Locality in an area in the Jammu and Kashmir Sector. Against heavy odds, he led the patrol and while he was within 150 yards of the enemy patrol he engaged them with Light Machine Gun and 2 inch mortar killing three of the enemy soldiers. The enemy also engaged his patrol with Medium Machine Gun and artillery fire. He extricated his patrol with great courage and calmness after dislodging the enemy which had entered our own territory. Although he was hit by an enemy MMG burst on his left arm and left leg, he continued to lead the patrol with courage and dash regardless of his injury. Later on it was discovered that he had six bullet injuries in his arm and leg.

In this action, Havildar Amar Singh displayed gallantry and leadership of a high order.

12. 9207565 Sepoy KHARAK SINGH, The Mahar Regiment (Borders). (*Posthumous*)

Sepoy Kharak Singh was in the leading platoon of a Battalion of Mahar Regiment which engaged the enemy force in Lipa Valley. As the platoon closed in, the enemy brought down heavy automatic and small arm fire. With complete disregard to his personel safety, he crawled forward, closed with the enemy, although wounded and lobbed a grenade inside the enemy bunker causing casualties to the enemy. Although he was bleeding profusely, he moved to another bunker, and while in the process of lobbing a grenade, he was hit by enemy automatic fire as a result of which he died.

In this action, Sepoy Kharak Singh displayed gallantry and determination of high order.

No. 38-*Pres.*/73.—The President is pleased to approve the award of the SHAURYA CHAKRA for acts of gallantry to :—

1. Shri B. S. GILL, Junior Engineer, Central Public Works Department, Airfield, Amritsar.

Shri B. S. Gill was incharge of the Repair Party of the Rajasansi, Amritsar aerodrome. After the Pakistani Air Force's pre-emptive attack on 3rd December, 1971, he organised his men and material to complete the task of filing up five craters caused in the aerodrome. He moved from point to point encouraging his men to work with speed. While doing repair work, an enemy bomber again dropped six bombs on the runway. Shri Gill had to disperse his men during the air attack but immediately, thereafter, got them together and re-commenced repairs at the same speed. By his inspiring leadership and courage, he ensured a high standard of team work among his men under conditions of darkness and threat of enemy air attack not only on 3rd December, 1971, but every time the runway was damaged by enemy air attack.

Throughout, Shri B. S. Gill displaced gallantry and determination of a high order.

2. Shri SRI KISHAN SHARMA, Driver, Northern Railway, Jodhpur.

Shri Sri Kishan Sharma was a locomotive driver on the Jodhpur Division of the Northern Railway. As soon as the advancing Indian Army units occupied the railway station at Khokhrapar in the enemy territory, rail communications were extended close to the advancing forces. He was the driver of the first train carrying vital supplies for the Jawans. While the train was performing shunting at Khokhrapar, there were repeated bombing and strafing by enemy aircraft, causing considerable damage to a large number of coaches. Undeterred, he continued to perform his duties and succeeded in removing these coaches to a safe distance. He also completed the placement of water tanks and other wagons containing vital supplies before taking his train, back to Mubabao.

In this action, Shri Sri Kishan Sharma displayed courage and devotion to duty of a high order.

3. Shri ROOP CHAND, Permanent Way Inspector, Northern Railway, Jodhpur Division.

Shri Roop Chand was a Permanent Way Inspector on Jodhpur Division of the Northern Railway. As soon as Khokhrapar station was occupied, the Division was called upon to extend, most expeditiously, the rail communications over a distance of about 11 Kilometers in enemy territory close to the advancing forces. Shri Roop Chand, with his gangmen, took up this challenging task and completed it in a remarkably short period in the face of repeated air attacks.

In this action, Shri Roop Chand displayed courage and devotion to duty of a high order.

4. Shri O. P. CHOPRA, Assistant Engineer, Northern Railway, Jodhpur.

Shri O. P. Chopra was Assistant Engineer incharge of a portion of the track between Jodhpur and Munabao. During the hostilities with Pakistan in 1971, a record number of military specials were run over this track. He maintained the track in perfect order in spite of repeated air attacks and serious damages. After the Khokhrapar station was occupied, his Division was called upon to extend rail communications most expeditiously close to the advancing army in the enemy territory. Although railway track and bridges had been damaged extensively by the retreating forces of the enemy and there were constant air attacks, the work was completed within a remarkably short period under his supervision.

Throughout, Shri O. P. Chopra displayed courage and devotion to duty of a high order.

5. Shri JOGESH CHANDRA DAS.

At the time of the India-Pakistan conflict of 1971, Shri Jogesh Chandra Das was working near the international border in the Garo Hills district of Meghalaya.

When all efforts to capture the enemy Post at Kamalpur in Mymensingh district, which was heavily guarded, proved futile, Shri Das, at considerable risk to his life, succeeded in preparing a sketch showing the actual location of booby traps, punjies, minefields and bunkers. Subsequently, when the Kamalpur Post was cordoned off, the enemy rushed to the scene with reinforcements and took position in a nullah at Gopalpur, about half a kilometre south of an Indian forward Post. Shri Das, who got a tip, quickly verified the information at considerable risk to his life and then rushed to the Indian Army Post, paying no heed at all to the shelling from the enemy, and passed on the information to the Company Commander. The troops immediately opened up artillery fire and shelled the area and thus foiled an imminent surprise atack. In the ensuing action eighteen enemy soldiers were killed and the rest fled.

Shri Jogesh Chandra Das thus made a very important contribution to the ultimate capture of this enemy post.

6. Shri CHIRONJI
7. Shri ZALIM
8. Shri MUKUNDI
9. Shri BADRI
10. Shri BALWANT

Village Chandrapura, District Morena, Madhya Pradesh.

On the night of 18th/19th April, 1970, a gang of dacoits, armed with M.L. guns, raided village Chandrapura. The dacoits took the villagers by surprise and collected all the able bodied men in the small village, in one place. One of the dacoits with the loaded M.L. gun stood on guard and the rest of the dacoits started looting the houses of Sarvashri Hazari, Zalim, Badri and Ramswaroop and forcibly removed the ornaments from the person of the ladies. In spite of the fact that the dacoits had an upper hand due to the guns held by them, Shri Hazari, unmindful of his own safety, pounced upon the dacoit who was standing on guard and grappled with him. The dacoit fired at him with his gun but Shri Hazari managed to deflect the gun and snatched it from him The other villagers namely Sarvashri Chironji, Zalim, Mukundi,

Badri and Balwant also mustered courage. They removed wooden bars from the bullock-carts standing around and started hitting the dacoits. The dacoits started firing indiscriminately but fortunately these villagers succeeded in inflicting major injuries on two of the dacoits who subsequently died in the hospital. This brave action of these villagers unnerved the dacoits and they took to their heels, leaving behind two M.L. guns and the property they had looted.

In this action, Sarvashri Chironji, Zalim, Mukundi, Badri and Balwant displayed courage and determination of a high order.

11. 9204775 Lance Naik KALANDAR SINGH, Mahar Regiment.

Lance Naik Kalandar Singh was a member of a patrol party which was sent to raid a hostile camp on 11th September, 1972 in an area in Nagaland. When the party was nearing the camp and he was fifty yards away from the huts, four hostiles suddenly came out and one of them fired at him. But fortunately he was not hit. But fortunately he was not hit. He immediately returned the fire and killed the man who had fired at him. At this stage his carbine was jammed. He immediately left his weapon and picked up the rifle of the dead hostile and fired at the other hostiles who were running away. He thus killed one more hostile. Two other hostile were wounded and disappeared into the jungle leaving behind their weapons.

In this action, Lance Naik Kalandar Singh displayed courage and determination of a high order.

12. Shri DILIP KUMAR DEV, Village Joynagar, Police Station Kotwali, Agartala.

Shri Dilip Kumar Dev made a number of trips inside Bangladesh to collect useful information regarding preparations and positions of enemy troops. His work was difficult and fraught with grave risks, particularly when the enemy forces were killing civilians on the slightest suspicion. His most notable achievement was sketching of an Airfield with all its defence lay-outs and installations. He also brought complete details of the enemy positions in and around Dacca which were useful for operations in Bangladesh.

Throughout, Shri Dilip Kumar Dev displayed courage and determination of a high order.

13. Shri PRAFULLA RANJAN SEN GUPTA, Manager, Simna Tea Garden, Tripura.

Shri Prafulla Ranjan Sen Gupta rendered valuable assistance through his labourers in the Tea Garden to the Border Security Force in collecting valuable information and planning their operations against the enemy during the operations against Pakistan in December, 1971. This enabled the Border Security Force to clear many areas from retreating enemy troops and Razakars and also resulted in the arrest of a number of Razakars and recovery of a number of rifles. Despite heavy shelling by the Pakistani forces, Shri Sen Gupta stuck to his position and also encouraged the local people to stay.

Throughout, Shri Prafulla Ranjan Sen Gupta displayed courage and determination of a high order.

14. Shri DHIRENDRA SEN GUPTA, Sonamura Town, Tripura.

Shri Dhirendra Sen Gupta was a member of the Civil Defence Committee of Sonamura Town and was the proprietor of a Pharmacy. This town was shelled by enemy forces a number of times. He moved about in the town and encouraged the people to face the danger boldly. He kept the Pharmacy open even when the whole market was deserted, so as to enable the people to buy medicines and also provided first-aid to the injured during the shelling.

Shri Dhirendra Sen Gupta thus displayed courage and sense of duty of a high order.

15. Shri SUNIL BARAN DEY, Sonamura Town, Tripura.

Due to continuous shelling by Pakistani troops, when Sonamura Town was almost deserted, Shri Sunil Baran Dey formed a nucleus of defence party in the town and patrolled it regularly at night and kept close watch on the vital installations against any possible acts of sabotage by the enemy.

Shri Sunil Baran Dey thus displayed courage, initiadve and devotion to duty of a high order.

16. Shri SADANANDA GUHA, Sonamura Town, Tripura.

During the period of intermittent shelling by the enemy in Sonamura Town, when most of the people shifted to other places leaving their homes, Shri Sadananda Guha patrolled the town with a small band of volunteers and guarded the property of the people against any damage by the Pakistani saboteurs.

Shri Sadananda Guha thus displayed courage and initiative of a high order.

17. Shri RAMESH MAJUMDAR, Village Debipur, Tripura.

On the 17th October, 1971, four Razakars armed with rifles entered Haripur village. They claimed to be freedom fighters and sought help from the villagers. Shri Ramesh Majumdar recognised them to be saboteurs and, despite the fact that the Razakars were armed, he immediately attempted to apprehend them, simultaneously raising a cry for help. Disregarding his personal safety and the fact that no body came to help him, he caught hold of one of the Razakars. Though he received serious injuries in the course of the tussle, he succeeded in driving away the Razakars who left behind their rifles and thus prevented them from committing any crime in the area.

In this action, Shri Ramesh Majumdar displayed courage of a high order.

18. Shri JADUNANDAN DUTTA, Secretary, Belonia Bar Association, Tripura.

When the border town of Belonia was subjected to intermittent shelling by Pakistani troops and it became essential to mobilise the public opinion in civil defence measures and to keep their morale high, Shri Jadunandan Dutta took a lead in this difficult task. Despite enemy mortar and artillery fire in the town, he moved about and prepared the public for appropriate precautionary steps.

Throughout, Shri Jadunandan Dutta displayed courage and initiative of a high order.

19. Dr. RABINDRA NATH CHOUDHURY, Medical Officer Incharge, Primary Health Centre, Harishyamukh (Belonia), Tripura.

Dr. Rabindra Nath Choudhury was Medical Officer-in-Charge of the Primary Health Centre, Harishyamukh (Belonia), which is barely 80 yards from the boarder. The area was subjected to heavy shelling by the Pakistani troops. On one occasion, when he was performing surgical operations on three evacuees who had been seriously injured by splinters, the enemy started shelling and the shells landed very close to the Primary Health Centre. Undeterred, he performed the operations and succeeded in saving the lives of the three evacuees. On another occasion, he again performed a surgical operation on a person having bullet injuries, despite the fact that the Centre was being subjected to firing.

Dr. Rabindra Nath Choudhury thus displayed courage and devotion to duty of a high order.

20. Dr. PREM SAGAR GARG, Senior Medical Officer, Fazilka.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Dr. Prem Sagar Garg offered his services to help the Army Medical-*cum*-Surgical team for attending the battle casualties which required immediate treatment. He worked round the clock with the Army surgeon and attended to the battle casualties during difficult and trying battle conditions. He was a source of inspiration for the military doctors.

Dr. Prem Sagar Garg thus displayed courage and devotion to duty of a high order.

21. Shri CHALIL PUTHIYAPURAYIL NARAYANAN, Assistant Armament Supply Officer.

Shri Chalil Puthiyapurayil Narayanan, Assistant Armanent Supply Officer, was entrusted with the task of disposing of ten unexploded Naval bombs in the Chittagon and Cox's Bazar areas in Bangladesh during January, 1972. This extremely hazardous task was undertaken by him most willingly. By his high degree of professional knowledge and

with the help of the bomb disposal team working with him, he defused and rendered safe all the bombs, except one which had landed on top of the Railway Headquarters building at Chittagon. The tail of this bomb had sheered off and it could not be defused. The alternatives were either to explode the bomb on site, which could have demolished the Railway Headquarters and many other buildings around it, or to remove the bomb from the site and destroy it in an open area which was extremely dangerous for the bomb disposal team. At great personal risk, he undertook to remove the bomb from the site, and successfully accomplished the task.

In this action, Shri Chalil Puthiyapurayil Narayanan displayed courage and leadership of a high order.

22. Shri N. RANGACHARY, Professional Assistant, India Meteorological Department, Bhuj.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Shri N. Rangachary was working in the Meteo ological Office located at Bhuj. The airfield located at Bhuj was subjected to bombing by the enemy on a number of times, but he kept the Meteorological Office working in the face of the enemy Action. Throughout, he remained with the staff and maintained very close liaison with the local IAF Station and the heads of other civilian departments. He was a source of inspiration to all the employees of the Meteorological Department.

Shri N. Rangachary thus displayed courage and devotion to duty of a high order.

23. Shri GANDA SINGH GILL, Senior Aerodrome Officer, Amritsar.

During the operations against Pakistan in December, 1971, Shri Ganda Singh Gill was Senior Aerodrome Officer-in-Charge of Civil Aerodrome, Amritsar. Amritsar Aerodrome was constantly attacked by Pakistani Air Force both by day and night. Unmindful of his personal safety and the fact that he had suffered a grievous loss in the death of his eldest son, who was an Army Officer, he remained in the station and made Amritsar Airport available for use by the Indian Air Force.

Shri Ganda Singh Gill thus displayed courage and devotion to duty of a high order.

24. Shri MIHIR KUMAR SENGUPTA, Aerodrome Officer, Agartala, Tripura.

Shri Mihir Kumar Sengupta was incharge of the civil aerodrome at Agartala. During the hostilities with Pakistan in 1971, he not only looked after the refugees who were settling in and around the airport, but also by his administrative ability avoided panic amongst the inmates residing at the airport. He moved from door to door in the face of heavy enemy shelling from across the border restoring confidence among the inmates. By his courage and sense of devotion to duty, he prevented large scale evacuation from Agartala and other airports located near India-Pakistan border. He maintained Agartala Airport and enabled Indian Air Force to utilise the airport round the clock under the most difficult circumstances.

Shri Mihir Kumar Sengupta thus displayed courage and devotion to duty of a high order.

25. Shri KAILASH CHAND MAHAJAN, Sub-Divisional Magistrate, Fazilka (Punjab).

On the 3rd December, 1971, Fazilka Sector was attacked by the enemy and the shells were falling all over the town. People immediately came out in the streets and began to move out of the town. Shri Kailash Chand Mahajan at once put into operation the machinery to channelise the human flow on the Malout Road according to the evacuation plans. He was personally going round the town, urging the people to be calm and supervised the exodus in complete disregard to his personal safety. On account of the occupation of a part of the Sabuana Distributory which is the main defence line in Fazilka Sector, the enemy was able to occupy one bridge intact on the night of 3rd December, 1971. On the 4th December, 1971, Shri Mahajan supervised the evacuation of State Bank cash amounting to Rs. 1.5 crores as well as evacuation of the families of Government officials. The same evening, with expectation of a major offensive by the enemy, he collected all the remaining Government officials in the City Police Station and consulted the Brigadier incharge of the operation who requested for retention of civil administration in Fazilka because he needed telephone, police, electricity and water supplies to be maintained. Though the tension ran high, Shri Mahajan remained in Fazilka all the time to create confidence among the services.

At 8 P.M. on the 4th December, 1971, Indian Army got information that enemy tanks had come to village Badha and had also gone on the Malout Road thereby encircling Fazilka town. At this juncture, Shri Mahajan managed to control the situatoin and maintained all essential services of the town in full trim. He rendered all possible assistance to the military authorities towards procurement of material required by them. The military authorities badly needed sand bags, other local defence stores and trucks for the conveyance of ammunition to the forward areas. Shri Mahajan personally mobilized all the resources and made available all that was needed.

Throughout, Shri Kailash Chand Mahajan displayed courage, determination and devotion to duty of a high order.

26. JC-NYA Naib Subedar SHINGARA SINGH, Engineering (Radio Operators).

On the 17th December, 1971, information was received at a forward Air Force Base that the enemy had bombed Bhatinda Railway Station as well as nearby villages causing considerable damage to civil property and population. It was also reported that several bombs had not exploded. Naib Subedar Shingara Singh immediately rushed to the place with his men and after carrying out a thorough search of the area, located seventeen unexploded bombs. Though fully aware that the bombs could have been fitted with delayed fuzes, he went ahead with the defusion of the bombs with complete disregard to his personal safety. In fact, one bomb did explode when he, along with his men, had just retired for lunch and later two bombs were found with the fuzing components having partly functioned. Undeterred, he successfully defused all the bombs within 96 hours and thus infused confidence in the local population.

In this action, Naib Subedar Shingara Singh displayed courage and leadership of a high order.

27. 235583 Corporal GURDIP SINGH DEOL, Blacksmith and Welder (I).

On the 15th April, 1971, a major fire broke out in the dispersal area of a forward Air Force Base. On hearing the siren, Corporal Gurdip Singh Deol, who was staying far away from the base, was the first to arrive at the scene on his motor cycle. He found that the fire was fast approaching blast pens endangering the safety of aircraft and he decided to move the aircraft out. He located a tractor. As the ignition key was not available, he had the tractor started through his ingenuity. By the time Corporal Deol got the tractor coupled with the aircraft nearest to the fire, the blast pen had already been surrounded by flames. Unmindful of his personal safety, he towed the aircraft out and thus saved it from destruction. He towed four more aircraft out of other blast pens in the same manner. During these operations, he sustained injuries, but did not see treatment until all the aircraft had been removed to safety.

In this action, Corporal Gurdip Singh Deol displayed courage and determination of a high order.

28. G/26335 DME Shri BHAG SINGH, General Reserve Engineering Force.

On the morning of 20th January, 1972, when a dozer which was engaged in formation cutting of a new hill road alignment had got badly bogged down and there was danger of losing the operator and the dozer, as it was sinking, DME Shri Bhag Singh volunteered to extricate to dozer. One track of the dozer was completely over hanging over the revine of about 280 feet with the belly of dozer stuck on the boulder. With utter disregard to his personal safety, he carried out the operation and extricated the machine.

In this action, DME Shri Bhag Singh displayed courage and devotion to duty of a high order.

29. G/72356 PNR Shri RAM SINGH, General Reserve Engineering Force.

Shri Ram Singh was on sentry duty at Quarry site at Kamang at 0005 hrs. on the night of 15th/16th April, 1972, when he was suddenly attacked by four Mizo hostiles. Although out numbered and faced with the hostlies who were

well armed, he fought single handed with them with a baton only. In the fighting, he sustained a bullet injury, and was pushed down into the nullah. Despite the injury, he raised alarm and continued to resist the hostiles at grave risk to his own life, till help arrived from the neighbouring Camps when the attackers fled.

In this action, Shr Ram Singh displayed courage and determination of a high order.

30. G/31341 DME Shri PREM CHAND, General Reserve Engineering Force.

DME Shri Prem Chand was assigned the task of maintaining a stretch of road between India and Sikkim. This road is highly susceptible to land slides and the slides are extremely dangerous with large size boulders and huge quantity of debris coming down. Despite these difficulties, he kept open the road. On the 16th August, 1972, a big land slide took place on the above mentioned road and the entire traffic was held up. Regardless of grave risk to his own life, he started clearing operation and succeeded in opening the road to traffic.

In this action, DME Shri Prem Chand displayed courage, devotion to duty of a high order.

31. GO-443 EE(Civ.) SARB DEO CHOWDHARY, General Reserve Engineering Force.

While conducting a party of Senior Officers on a road in the border area on 31st January, 1972, Shri Sarb Deo Chowdhary came across a rock slide, which had completely blocked the road. This brought a convoy of about 200 vehicles to a halt. Boulders were coming down continuously, thus positing danger to the vehicles and the men on the road. His work force was reluctant to face the danger and clear the slide, irrespective of the fact that the restoration of line of communication was extremely necessary. Regardless of imminent danger to his life, he personally led the men to the work of clearing the road-block. Undaunted by the injury, sustained by a falling boulder, he remained with his men and managed to clear the road within a few hours. Again, on another occasion, when faced with a big land slide, he displayed courage and kept up the morale of his men who had suffered a setback owing to an instantaneous death of one of the pioneers at the site.

In these actions, Shri Sarb Deo Chowdhary displayed courage and devotion to duty of a high order.

32. GO-694 AEE(C) Shri ASOK KUMAR MUKHERJEE, General Reserve Engineering Force.

AEE(C) Shri Asok Kumar Mukherjee was with a Road Maintenance Unit in the western part of Rajasthan in November, 1971. He was entrusted with the task of maintaining a road vitally important from the strategic point of view. The stretch posed a challenging maintenance problem during the operations against Pakistan in 1971 as the entire stretch of the road passes through the sandy beld, crossing a large number of shifting type of sand dunes. Undaunted by the frequent enemy bombardment, he moved on the road with his men attending to various maintenance tasks and ensured uninterrupted flow of traffic despite various hazards. After the ceasefire, he was entrusted yet another challenging task. The total work involved was equivalent to approximately 6 Kms. of road and was to be completed within two months. Working round the clock and unmindful of his personal safety and comfort, he completed the task ahead of schedule.

Throughout, Shri Asok Kumar Mukherjee displayed courage, determination and leadership of a high order.

33. G/107190 Supdt. B/R Gde. I Shri ALI GOHAR, General Reserve Engineering Force.

Shri Ali Gohar was with a Road Maintenance Unit in Rajasthan Sector in November 1971. He was responsible for maintenance of road sector from Jaisalmer to Ramgarh which was very vitally important from operation point of view. During the operations against Pakistan in 1971, the area was subjected to constant enemy bombardment and air straffing. With complete disregard to his safety and comfort, he moved on the roads with his men and kept the roads in perfect trafficworthy condition. After the ceasefire, he was entrusted with the task of construction of two helipads. He planned and organised the work, and working round the clock, completed the work ahead of schedule.

Throughout, Shri Ali Gohar displayed gallantry and devotion to duty of a high order.

34. G/22707 DME Shri RAMESH LAL, General Reserve Engineering Force.

DME Shri Ramesh Lal was with a Road Maintenance Unit which was induced in operational area for maintenance of strategic roads in Rajasthan area in November, 1971. Though all roads were black-topped, yet the berms were in very bad shape and two-way traffic was not possible on these roads. At many places, the berms were covered with heavy sand dunes of varying heights of 4 feet to 6 feet. DME Shri Ramesh Lal was entrusted with the task of clearance of sand dunes on the two roads during enemy action between 3rd December and 17th December, 1971. Unmindful of enemy bombardment, he carried out the task working day and night and made the roads fit for two-way traffic by clearing all sand dunes only in 4 days' time.

In this action, DME Shri Ramesh Lal displayed gallantry and devotion to duty of a high order.

35. G/85095 EEM Shri PREM SINGH, General Reserve Engineering Force.

EEM Shri Prem Singh was with a Road Maintenance Unit which was induced in operational area for maintenance of strategic roads in Rajasthan area in November, 1971. Though all roads were black topped, yet the berms were in very bad shape and two-way traffic was not possible on these roads. At many places, the berms were covered with heavy sand dunes of varying heights of 6 feet to 8 feet. EEM Shri Prem Singh was entrusted with the task of clearance of sand dunes on the two roads during enemy action between 3rd December and 17th December, 1971. Unmindful of enemy bombardment, he carried out the task working day and night and made the roads fit for two-way traffic by clearing all sand dunes only in 3 days' time.

In this action, EEM Shri Prem Singh displayed gallantry and devotion to duty of a high order.

36. G/104932 Peon Shri VAYYANATHU KOSHY THOMAS, General Reserve Engineering Force.

On the night of 21st August, 1972, four hostile Nagas, armed with rifles, pistols and dahs, raided the offices of 19 RMU at Chazuba with the intention to rob cash and typewriters. Peon Shri Vayyanathu Koshy Thomas was sleeping in the office 19 RMU when these hostiles broke into the office room. He woke up after hearig some noise and found that the hostiles were demanding keys of cash and typewriters from a Mate. When he tried to enquire, the hostiles caught him and threatened him to death in case he raised any alarm and did not produce keys. Although he knew the location of the keys, he did not divulge the information. He succeeded to take out two hostiles outside and made efforts to escape and raise alarm, but the hostiles fired three shots to kill him. He, however, tactfully managed to escape and raise alarm and thus saved himself and Government property.

In this action, Peon Shri Vayyanathu Koshy Thomas displayed gallantry, presence of mind and devotion to duty of a high order.

37. 245354 Corporal JAI RAJ VIND, Air Field Safety Operator.

On the 4th December, 1971, an aircraft fully loaded with armament stores met with an accident on landing at a forward Air Force Base. The nose wheel of the aircraft had collapsed and the aircraft caught fire. In spite of the inherent danger of an explosion due to missiles and other armament stores being loaded on the aircraft, Corporal Jai Raj Vind undertook the hazardous task of putting out the fire. He did this successfully despite being in the close vicinity of the burning aircraft, with complete disregard to his personal safety. It was through his determined efforts that he succeeded in putting out the fire; he thereby saved the life of the pilot and also avoided the aircraft becoming a complete wreck.

The conspicuous courage, presence of mind and complete disregard for personal safety displayed by Corporal Jai Raj Vind. were in the highest traditions of gallantry in the Indian Air Force.

38. 2659927 Grenadier RAN SINGH, The Grenadiers.

Grenadier Ran Singh was a member of a patrol party which was detailed on a patrol from 15th March, 1972 to 20th March, 1972 in a snow bound area on our North

Eastern border. On the 18th March, 1972 while the party, comprising eight members, was caught in a blizzard, an avalanche suddenly swept down the slopes of Dzajila and buried the entire party. Grenadier Ran Singh, who was only partially buried, crawled out and set about digging in the mass of snow, with his bare hands, for the other members of the party. He rescued another Grenadier and after reviving him encouraged him to join in the rescue operation. Grenadier Ran Singh continued to dig with his bare hands and in the process lost his snow goggles and cap and also severely injured his arm. Undaunted, he continued to work and rescued one by one all the members of the party. However, the last man to be rescued was dead due to suffocation.

In this action, Grenadier Ran Singh displayed courage and devotion to duty of a high order.

39. Civilian Driver Shri NAND KUMAR JHA

(Posthumous)

Shri Nand Kumar Jha was driving a civilian truck while on duty with an Army Unit on 4th December, 1971, in the Eastern Sector. The road on which the convoy was advancing was heavily mined. Due to the extensive nature of enemy minefields, only the paved portion of the road was cleared of mines. When the other civilian drivers refused to go forward, he walked upto the front of the convoy and persuaded the drivers to move forward. As their vehicles were carrying defence stores, Shri Jha personally led the convoy. Further ahead on the road the convoy was halted because an Army Vehicle had broken down. The only way to proceed ahead was to go round the Army Vehicle by leaving the road. Shri Jha was fully aware that the sides of the road were not cleared of mines and there was grave danger of his vehicle being blown up. However, as his vehicle carried urgently needed defence stores, he volunteered to drive his vehicle off the road. As he attempted this manoeuvre, his vehicle struck a mine and was blown up and he was killed on the spot.

Shri Nand Kumar Jha thus displayed courage, determination and devotion to duty of a high order.

A. MITRA, Secy. to the President

LOK SABHA SECRETARIAT

New Delhi-1, the 14th May 1973

No. 1(2)-*PU*/73.—The following Members of Lok Sabha and Rajya Sabha have been declared as duly elected to serve as members of the Committee on Public Undertakings for the term ending on the 30th April, 1974 :—

Members of Lok Sabha

1. Shri Dinen Bhattacharya.
2. Shri T. H. Gavit.
3. Shri K. Gopal.
4. Shri J. Matha Gowder.
5. Shrimati Subhadra Joshi.
6. Dr. Mahipatray Mehta
7. Dr. Sankta Prasad.
8. Shri Nawal Kishore Sharma.
9. Shri Ramavatar Shastri.
10. Shri R. P. Yadav.

Members of Rajya Sabha

1. Shri M. S. Abdul Khader.
2. Shri Lal K. Advani.
3. Shri U. N. Mahida.
4. Shrimati Purabi Mukhopadhyay.
5. Shri Suraj Prasad.

The Speaker has been pleased to appoint Shrimati Subhadra Joshi as Chairman of the Committee.

M. A. SOUNDARARAJAN, Dy. Secy.

MINISTRY OF LAW JUSTICE AND COMPANY AFFAIRS

(Department of Legal Affairs)

New Delhi, the 14th May 1973

No. A.11019(3)/73-Adm.III(LA).—In pursuance of sub-section (3) of section 255 of the Income-tax Act, 1961, and in continuation of the notification of the Government of India in the Ministry of Law and Justice (Department of Legal Affairs) No. A.11019(3)/72-Adm.III(LA), dated the 31st January, 1973, the Central Government hereby authorises each of the following members of the Income-tax Appellate Tribunal, for the purposes of the said sub-section, namely :—

1. Shri M. K. Srinivasa Iyenger, Judicial Member.
2. Shri E. M. Narayanan Unni, Accountant Member.
3. Shri K. Ranganathachari, Judicial Member.
4. Shri Y. Upadhyay, Accountant Member.
5. Shri P. V. Balakrishna Rao, Judicial Member.
6. Shri Bishan Lal, Accountant Member.
7. Shri Sukh Dev Bahl, Judicial Member.
8. Shri R. R. Rastogi, Judicial Member.
9. Shri Mool Raj Sikka, Judicial Member.
10. Shri R. L. Segel, Judicial Member
11. Shri A. Krishnamurthy, Judicial Member.
12. Shri George Cheriyan, Accountant Member.

P. B. VENKATASUBRAMANIAN, Jt. Secy. & Legal Adviser.

MINISTRY OF COMMERCE

Kandla Free Trade Zone Steering Board

New Delhi, the 24th May 1973

RESOLUTION

No. 3/2/73-*FTZ(T).*—A high level Steering Board known as the Kandla Free Trade Zone Steering Board has been constituted with the following composition :—

Chairman

(1) Deputy Minister of Commerce.

Members

(2) Special Secretary/Additional Secretary, Ministry of Commerce, New Delhi.

(3) Secretary, Industries, Mines & Power, Government of Gujarat, Gandhinagar.

(4) Joint Secretary, Ministry of Finance, Department of Economic Affairs, New Delhi.

(5) Member (Customs), Central Board of Excise & Customs, Ministry of Finance, Department of Revenue & Insurance, New Delhi.

(6) Financial Adviser (Commerce), Ministry of Finance, Deptt. of Expenditure, New Delhi.

(7) Joint Secretary, Ministry of Industrial Development, New Delhi.

(8) Chairman, Kandla Port Trust, Gandhidham.

(9) Representative, Planning Commission, New Delhi.

Member-Secretary

(10) Joint Secretary/Director in charge of Kandla Free Trade Zone Cell, Ministry of Commerce, New Delhi.

2. The terms of reference of the Board are as follows :—

(i) To review from time to time the working of the Kandla Free Trade Zone and give such directions as it may deem fit for the proper functioning of the industries already established in the Zone and for the growth of the Zone on right lines;

(ii) To take decisions on additional fiscal and other concessions that may be needed to attract the right type of entrepreneurs and quicken the pace of industrialisation of the Zone keeping in view the local conditions and concessions available to entrepreneurs in Free Trade Zones in other parts of the world where success has been achieved; and

(iii) To deal with policy issues relating to Kandla Free Trade Zone needing high level attention and which may be referred to it by the Kandla Free Trade Zone Committee.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India and a copy thereof communicated to all concerned.

T. K. SARANGAN, Director

MINISTRY OF AGRICULTURE

Department of Community Development

AMENDMENT

New Delhi, the 26th May 1973

No. 29/3/69-TRG-RMP.—The following amendments are made to this Ministry's Resolution No. 29/3/69 Trg./RMP. dated the 23rd July, 1971, regarding the composition of the Central Committee of Direction for Pilot Research Project in Growth Centres :—

(a) In item (iii)—

(1) For Serial No. 15, *substitute* the following :—

"15. Dean, National Institute of Community Development, Hyderabad."

(2) After Serial No. 18, *add* the following Serial Nos :—

"19. Shri Pampan Gowda, Member, Lok Sabha."

"20. Shri R. N. Haldipur, Joint Secretary, Department of Personnel, Cabinet Secretariat, New Delhi."

(b) For item (iv), substitute the name of Shri J. S. Sarohia for Shri M. N. Chaudhuri.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India.

N. A. AGHA, Jt. Secy.

DEPARTMENT OF SOCIAL WELFARE

New Delhi-1, the 26th May 1973

RESOLUTION

No. F.7-1/73-RPU.—In supersession of Government Notification No F.25/1/70-SW.5, dated the 4th July 1970, the Advisory Committee on Social Welfare Research is hereby reconstituted to advise the Department of Social Welfare in regard to :

(i) promotion, coordination and utilisation of research in social welfare, social policy and social development;

(ii) identification of areas of research and study and indication of priorities;

(iii) methodological soundness, importance, adequacy and costs of proposals for research and study submitted to the Department of Social Welfare for financial support;

(iv) any other matter relating to the promotion of research in social welfare.

2. The Committee will have the following members :

(i) Shri P. N. Luthra, Additional Secretary, Department of Social Welfare, New Delhi.—*Chairman* (*Ex-officio*)

(ii) Smt. P. P. Trivedi, Joint Secretary, Department of Social Welfare, New Delhi.—*Member* (*Ex-officio*)

(iii) Prof. S. C. Dube, Director, Indian Institute of Advance Study, Simla.—*Member*

(iv) Prof. S. Das Gupta, Director Gandhian Institute of Studies, Varanasi.—*Member*

(v) Shri S. N. Ranade, Principal, Delhi School of Social Work, Delhi University, Delhi.—*Member*

(vi) Shri P. Ramachandran, Head of Research Department, Tata Institute of Social Sciences, Bombay.—*Member*

(vii) Shri V. Jagannadham, Professor of Social Policy and Administration, Indian Institute of Public Administration, Delhi.—*Member*

(viii) Shri P. P. I. Vaidyanathan, Director, Central Institute of Research & Training in Public Cooperation, New Delhi.—*Member* (*Ex-officio*)

(ix) Dr. K. G. Krishnamurthy, Joint Director (Social Welfare), Planning Commission, New Delhi.—*Member*

(x) Shri J. P. Naik, Member-Secretary, Indian Council of Social Science Research, New Delhi.—*Member* (*Ex-officio*)

(xi) Shri K. N. George, President, Association of Schools of Social Work, C/o Madras School of Social Work, Madras.—*Member* (*Ex-officio*)

(xii) Dr. A. B. Bose, Adviser, Department of Social Welfare, New Delhi.—*Member-Secretary* (*Ex-Officio*)

3. The tenure of the members of the Committee will be for a period of three years. Government may extend this period.

4. The Committee will have powers to co-opt additional members and invite eminent research workers in the field to attend its meetings as and when necessary.

5. No special remuneration will be paid for the membership of the Committee. The official members will, however, be entitled to draw T.A./D.A. etc. for the journeys undertaken by them in connection with this assignment in accordance with the rules applicable to them in their respective Departments. The non-official members of the Committee will be entitled to claim T.A./D.A. for their journeys in connection with attending meetings as admissible to First Grade Officers of the Government of India.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India.

P. P. TRIVEDI, Jt. Secy.

(Department of Culture)

New Delhi, the 29th May 1973

No. F.22-2/72-CAI(2).—In partial modification of the Department of Culture Notification No. F. 22-2/72-CAI(2), dated the 27th November, 1972, Prof. O. P. Bhatnagar, Honorary Secretary, Public Library, Allahabad, at present a Member of Indian Historical Records Commission as a representative of the Ravi Shankar University, Raipur, is appointed as Member of the Indian Historical Records Commission as a nominee of the Central Government under clause 3.IA.(2) of the Constitution of the Indian Historical Records Commission with immediate effect.

The term of his appointment will be upto 25th September, 1977.

A. S. TALWAR, Under Secy.

MINISTRY OF WORKS AND HOUSING

New Delhi, the 31st May 1973

RESOLUTION

SUBJECT :—*High Powered Board for the formulation and the implementation of the development plans for the Delhi Metropolitan Area and the National Capital Region—Reconstitution of.*

No. 8-6(1)/69-UDII.—The High Powered Board for the formulation and implementation of the development plans of the Delhi Metropolitan Area and the National Capital Region was constituted *vide* Ministry of Health Resolution No. F.10-79/60L.S.G. dated the 31st July, 1961. The composition of the High Powered Board was changed last *vide* Ministry of Health, Family Planning and Urban Development (Department of Health and Urban Development) Resolution No. 21001/4/68-UD, dated 9th October, 1968.

2. To make the High Powered Board more workable, the Government of India have decided to reconstitute it. The composition of the reconstituted Board will be as follows :

Chairman

1. Union Cabinet Minister for Works and Housing.

Members

2. Union Minister of State for Works and Housing.
3. Union Minister of State for Home Affairs.
4. Union Minister of State for Irrigation & Power.
5. Union Minister of State for Planning.
6. Union Minister of State for Health.
7. Chief Minister of Uttar Pradesh.
8. Chief Minister of Haryana.
9. Chief Minister of Rajasthan.
10. Lt. Governor of Delhi.
11. Mayor of Delhi.
12. Chief Executive Councillor, Delhi Metropolitan Council.

Member-Secretary

13. Joint Secretary (Housing), Ministry of Works & Housing.

3. The terms of reference of the Board will remain unchanged.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

P. RRABHAKAR RAO, Jt. Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1973